ओ३म्

मांसाहार क्यों निषिद्ध है?

मराठी लेखक

प्रा० डॉ० सुग्रीव बलीराम कालें

एम०एससी०, पी.एच०डी०
आयुर्वेदरत्न, विद्यावाचस्पति, एन०डी०
पूर्व अध्यक्ष स्नातकोत्तर अनुसंधान विभाग वनस्पति विज्ञान,
विद्यानगर, परली वैजनाथ (महाराष्ट्र)
पिन-४३१ ५१५

हिन्दी अनुवाद

प्रा० गोविन्द घनश्याम मैंदरकर

बी०एससी०, एम०एड०
सेवानिवृत्त प्राचार्य, नेहरू चौक,
धाराशिव (उस्मानाबाद), महाराष्ट्र
पिन-४१३५०१

प्रकाशक

श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास

हिण्डौन सिटी (राजस्थान)-३२२ २३०

प्राक्कथन

भारतीय विचारधारा में प्राचीन काल से ही शाकाहार को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है, मनुष्य स्वभावतः ही शाकाहारी प्राणी है। सम्प्रति सर्वत्र मांसाहार की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। तेजी से बढ़ती हुई औद्योगिक प्रगति में मनुष्य अपने आंचार, विचार, व्यवहार, खान-पान आदि में अविवेकी बनता जा रहा है। इस अविवेक की परिणति मांसाहार की वृद्धि में अवश्यम्भावी है। परन्तु इस वृद्धि के परिणाम कितने भयंकर हैं इस पर विचार करने के लिए कोई तैयार नहीं है। अनेक रोगों की जड़ यह मांसाहार ही आज घर-घर में स्वीकृत होने के कारण मात्र देश की ही नहीं अपितु सारे संसार की अभूतपूर्व दुर्दशा हो रही है।

शाकाहार ही जीवन का निर्माण करता है तो मांसाहार उसी जीवन का सर्वनाश करता है, अतः यदि हमें सर्वोन्नति की आकांक्षा हो तो मांस भक्षण का सर्वथा त्याग अत्यावश्यक है। यदि मांसाहार तामसिक है तो शाकाहार सात्विक है। विद्यार्थी समुदाय के सान्निध्य से मैं स्वानुभव से कहना चाहता हूँ कि शाकाहारी छात्रों की सत्य-ग्रहण में प्रवृत्ति अधिक होती है। सात्विकता के कारण मन शुद्ध, बुद्धि पवित्र तथा आत्मा आनन्दमय होती है। शाकाहारी मनुष्य सदाचारी एवं बुद्धिमान् होता है। इसके विपरीत मांसाहारी मनुष्य दुराचारी, तामसिक बुद्धिवाला तथा पाप प्रवृत्त होता है।

शाकाहारी नेतृत्व ही राष्ट्र के पुनर्निर्माण में समर्थ होता है। मांसाहारी राजा या सत्ताधीश राष्ट्र का विकास किस प्रकार करेगा? आज की युवा पीढ़ी सम्पूर्णरूपेण शाकाहारी बनेगी तो राष्ट्र के पुनर्निर्माण में तथा विकास में देर न होगी।

सम्प्रति सभी स्तरों पर सर्वत्र मांस तथा अण्डों का प्रचार-प्रसार बड़ी मात्रा में हो रहा है, उसे रोकने के लिए एवं शाकाहार के प्रचार-प्रसार हेतु डॉ० सुग्रीव बलीराम काले लिखित—एक वैज्ञानिक पुस्तिका 'मांसाहार क्यों नहीं?' प्रकाशित हो रही है। सरल भाषा में लिखी यह तर्काधिष्ठित पुस्तिका शाकाहार को प्रोत्साहित तथा मांसाहार का निषेध करने में सक्षम होगी। आशा है पाठकगण इसका स्वागत कर श्रद्धा से इसे पढ़ेंगे। लेखक, प्रकाशक तथा सहयोगी धन्यवाद एवं शुभेच्छा के पात्र हैं। पुनःश्च सभी का धन्यवाद करता हूँ।

—स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

प्रधान, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परली वैजनाथ

विषय-सूची

मांसाहार त्याज्य क्यों है ? ९

आधुनिक संसार में धार्मिक विचार १०

अन्नानुकूल शरीर रचना ११

शाकाहार-मांसाहार तुलनात्मक तालिका १२

शाकाहारी-मांसाहारी प्राणी अन्तर तालिका १५

मांसाहार के दुष्परिणाम १६

(क) मांसाहार के शारीरिक दुष्परिणाम १७

(ख) मांसाहार के मानसिक दुष्परिणाम २०

(ग) मांसाहार का बुद्धि पर दुष्परिणाम २१

(घ) मांसाहार एवं आत्मा का स्वास्थ्य २१

(ङ) मांसाहार तथा सामाजिक व्यवस्था २२

(च) मांसाहार तथा आर्थिक व्यवस्था २२

(छ) मांसाहार एवं पुनर्जन्म २२

मांसाहार एवं मनुष्य-जीवन का लक्ष्य २२

मांसाहार एवं पर्यावरण सन्तुलन २३

मांसाहार एवं राज्य-व्यवस्था २३

मांसाहार और मनुष्य का कर्त्तव्य २४

मांसाहार एवं मांसाहारी के विषय में
अमरीका, इंग्लैण्ड आदि पाश्चात्य देशों के अनुभव २४

शाकाहार के तामस एवं राजस अंश का निषेध २५

मांसाहारी लोगों की युक्तियों का निराकरण २५

सब सत्य विद्याओं की पुस्तक वेद में पशुहत्या का निषेध है— ३१

प्राचीन ऋषि-मुनियों का (अर्थात् वैज्ञानिकों का) मन्तव्य ३१

परिशिष्ट—१

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा संचालित गोरक्षा एवं
सर्वविध पशु-प्राणी हत्या विरोधी अहिंसात्मक अभियान ३६

परिशिष्ट—२

राजस्थान के पोलिटिक एजेण्ट कर्नल ब्रुक्स से
महर्षि दयानन्द का गोरक्षा पर वार्त्तालाप ४३

मांसाहार त्याज्य क्यों है ?

आज का युग बड़ा गतिशील है। आचार, विचार एवं आहार, इनमें बड़ा परिवर्तन हुआ है, हो रहा है। तथाकथित उन्नत देशों का अन्धानुकरण करने में हम गर्व का अनुभव कर रहे हैं, चाहे वह उचित हो या अनुचित। इस अनुकरण से होनेवाले परिणामों पर किसी का ध्यान ही नहीं है। जब अन्य देशों से इनके दुष्परिणामों के निष्कर्षों की जानकारी हमें मिलेगी तब हम सावधान होंगे अन्यथा नहीं। इसलिए इस सन्दर्भ में आहार से सम्बन्धित कुछ जानकारी इस पुस्तिका में देने की आवश्यकता का अनुभव कर रहा हूँ।

मनुष्य को क्या खाना चाहिए और क्या नहीं ? इस सन्दर्भ में प्राचीनकाल से पर्याप्त मात्रा में विचार किया गया है। प्राचीनकाल में अरण्यों की विपुलता थी, अतः उनसे प्राप्त फलों को प्रमुखता दी जाती थी और वह उचित भी था। विज्ञान भी इस बात को प्रमाणित करता है। मध्यकाल में अज्ञान के कारण इसके विपरीत विचार पनपते रहे। परिणाम स्वरूप फलाहार की उपेक्षा हुई तथा मांसाहार का प्रचलन बढ़ा। आज कतिपय लोग मांसाहार को शरीर का पोषक मानते हैं और अपनी बात सिद्ध करने के लिए निम्न प्रकार से युक्तियाँ भी प्रस्तुत करते हैं—

१. मानव शरीर के लिए प्रोटीन (Prtoteins) की आवश्यकता होती है। उनके न मिलने पर शरीर का उचित ढंग से विकास नहीं होता तथा शरीर रोगग्रस्त हो जाता है।
२. मांस में प्रोटीन पर्याप्त मात्रा में होते हैं, अतः उनका सेवन उचित है।
३. मांसाहारी लोग शाकाहारी लोगों से वनस्पति के खाने के औचित्य के विषय में अनेक प्रश्न पूछते हैं।
४. दूध भी तो रक्त से ही बनता है। अतः दूध का सेवन भी तो हिंसा ही है, फिर मांस भक्षण में ही क्या दोष है ?
५. बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए अनाज की मात्रा पर्याप्त नहीं होगी, अतः जीवनयापन हेतु मांसाहार अटल है।
६. आजकल शाकाहारी अण्डे भी उपलब्ध हैं। उनसे चूजे निकलते नहीं। अतः उनका सेवन शाकाहारी ही है। उसमें हिंसा कहाँ है ?
७. यदि हम मांसाहार न करें तो जानवर और पालतू पक्षी किस काम के ? उनकी संख्या बढ़ती जाएगी, जो स्वयं एक समस्या बन जाएगी। गोवंश, मेष, बकरी, वराह, बत्तक, कुक्कुट का उपयोग क्या है ? उनकी बढ़ती संख्या का नियन्त्रण कैसे करें ?

८. यदि मांसाहार पाप तथा हिंसा है तो वनस्पति का खाना भी तो हिंसा और पाप ही है, क्योंकि वनस्पतियाँ भी सजीव ही हैं।

९. मांसाहार पौष्टिक है। उससे बड़ी मात्रा में ऊर्जा मिलती है। इसलिए शाकाहार की अपेक्षा मांसाहार अच्छा है।

१०. समुद्र तट आदि पर अनाज की उपज बहुत कम होती है तथा मछली आदि जलचरों की उपलब्धता अधिक मात्रा में होती है, अतः ऐसे स्थान पर मांसाहार अनिवार्य हो जाता है।

आधुनिक संसार में धार्मिक विचार

आधुनिक युग में तथाकथित धार्मिक कहलानेवाले लोग बड़ी संख्या में हैं, अपितु उनमें भी मांसाहारी लोग कम नहीं है। अपने प्रिय देवता को नैवेद्य भी रक्त, मांस आदि का देने के लिए पशु की बलि देते हैं। इन मांसाहारियों की उपासना के ढंग भी भिन्न हैं। इन दिनों नरबलि देनेवालों की संख्या कम होती दिखाई दे रही है तो पशुबलि की संख्या बढ़ती जा रही है।

इसके विपरीत शाकाहारी नैवेद्य देनेवाले, जो पशु-पक्षी की बलि नहीं देते, जो मांसाहार का निषेध करते हैं, वे अपनी अहिंसक उपासना के पक्ष में निम्न युक्तियाँ देते हैं—

१. मांसाहार के लिए प्राणी हत्या अनिवार्य होती है जो पाप का कारण है।

२. प्राणी हत्या मात्र हिंसा है, जिसमें भूत दया नहीं होती।

३. मांस अभक्ष्य है, मांसाहार राक्षसी आहार है जो तामस है।

४. मांसाहार से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

इस प्रकार आज दो प्रकार की विचारधाराएँ अस्तित्व में हैं। नई पीढ़ी को इन दोनों में सत्यासत्य का निश्चय करना कठिन हो रहा है। इस विषय में वह भ्रमित है। वह (नई पीढ़ी) देखती है कि कुछ लोग अमानुष, क्रूर, धोखेबाज और विश्वासघात की प्रवृत्ति का व्यवहार करते हैं, तो कुछ इसके पूर्णतः विपरीत। मनुष्य-मनुष्य के व्यवहार में उसे दांभिकता के दर्शन होते हैं। ऐसे लोग आधुनिक भौतिक विज्ञानवादी लोगों के प्रश्नों का समाधान नहीं कर सकते। इसलिए इन दोनों विचार-प्रणालियों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार कर उनका उचित मूल्यांकन करना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रकृति स्वयं कुशल शिक्षिका है। उसके तत्त्व अपने आप में सत्य एवं शाश्वत हैं, अतः प्रकृति का अवलोकन ही हमें आज की अपनी सभी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है। प्रकृति का चक्र स्वयं संतुलित है। एक प्राणी दूसरे प्राणी पर आश्रित है—जीवो जीवस्य जीवनम्। कतिपय प्राणी प्राकृतिक पदार्थ यथा सूर्यप्रकाश, जल, वायु, भूमि रासायनिक पदार्थ आदि का उपयोग कर अपना अन्न स्वयं तैयार करते हैं। इन्हें वनस्पति कहते हैं। इनसे प्राप्त अन्न

Organic food कहलाता है। इन वनस्पतियों द्वारा उपलब्ध अन्न पर ही प्राणी जीवन यापन करते हैं। यदि वनस्पति जगत् नष्ट हो जाए तो प्राणी जगत् भी स्वयं नष्ट हो जाएगा, क्योंकि प्राणी वनस्पति की तरह अपना अन्न स्वयं तैयार नहीं कर सकते। मानव जाति भी इसी श्रेणी में आती है। कुछ प्राणी वनस्पतियों के आश्रित हैं, कुछ प्राणी वनस्पतिजन्य अन्न तथा मांस, दोनों पर अपना जीवनयापन करते हैं तो कुछ प्राणी मात्र मांस खाकर ही जीते हैं। कुछ सड़े गले अन्न वनस्पतिजन्य तथा प्राणीजन्य पर निर्वाह करते हैं। इन सब प्राणियों के शरीर अपने भक्ष्य के अनुकूल ही निसर्गतः बने हैं। परमात्मा की व्यवस्था अतर्क्य है। ईश्वर के अस्तित्व से ही जिन्हें विरोध है, उन्हें भी प्रकृति की इस व्यवस्था को तो मानना ही पड़ता है।

अन्नानुकूल शरीर रचना

प्राणियों का अन्न किस प्रकार का होना चाहिए, एवं उस अन्न के अनुकूल ही प्राणियों के शरीर की रचना कैसी होनी चाहिए, इसके अनुसार ही ईश्वर ने प्राणियों के शरीरों की रचना की है। मांसाहारी प्राणियों के शरीर में मांस के पाचन के लिए आवश्यक रसायन होते हैं। उनकी आँतें अधिक लम्बी नहीं होती। यदि खाया हुआ मांस उनकी आँतों में अधिक समय तक रहेगा तो वह सड़ जाएगा, दुर्गन्ध फैलेगी, अम्लयुक्त विषैले पदार्थ उत्पन्न होते हैं, वे हानिकारक होने से उन्हें शरीर से शीघ्र बाहर फेंकने के हेतु आँतों की लम्बाई कम होना हितकारी होता है, साथ ही जिस मांस का पचन न हुआ हो उस मांस को शीघ्र ही बाहर निकालने हेतु आँतों का छोटा होना अत्यन्त लाभकारी है। अतः मांसाहारी प्राणियों की आँतें लम्बी नहीं होती।

ईश्वर ने प्रत्येक सजीव के लिए उसके अनुकूल ही अन्न का निर्माण किया है तथा उन्हें अन्न उपलब्ध भी किया है। आवश्यकता के अनुसार उस अन्न का सेवन न तो हिंसा है और न अहिंसा ही। वनस्पति जगत् का अन्न निर्जीव वस्तु, यथा जल, वायु, सूर्यप्रकाश, भूमि के खनिज आदि द्रव्य हैं। इनको उपयोग कर वनस्पति अपना अन्न स्वयं तैयार करती है। वनस्पतिजन्य इन अन्न पदार्थों पर शाकाहारी प्राणी, शाकाहारी प्राणियों पर मांसाहारी प्राणी तथा मांसाहारी प्राणियों पर द्वितीय श्रेणी के मांसाहारी प्राणी अपना जीवन यापन करते हैं। अपना प्राकृतिक एवं स्वाभाविक अन्न प्राप्त कर उसका सेवन करना प्राणियों के लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य ही है। उसमें परिवर्तन असम्भव है, क्योंकि उनके शरीर की रचना ही उस प्रकार की है। चिड़िया तथा अन्य पक्षी धान्यकण के साथ रेत, कंकड़ भी खाते हैं, क्योंकि वह उनकी आवश्यकता है, परन्तु यह मनुष्य के लिए असम्भव है। बिल्ली चूहों को खाती है, साँप मेंढक तथा चूहों को खाते हैं। बड़े पक्षी छोटे पक्षी को, बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है, क्योंकि वह उनका स्वाभाविक एवं प्राकृतिक भोजन

है। इसमें पाप-पुण्य, हिंसा-अहिंसा का प्रश्न ही नहीं उठता। इसके विपरीत प्रकृति के नियम के विरुद्ध जाना ही पाप तथा हिंसा है। आज के औद्योगिक युग में नई-नई मशीनें बनाई जाती हैं। इनकी रचना ईंधन के अनुसार ही होती है। कुछ मशीनें पैट्रोल पर, कुछ डीजल पर तो कुछ भाप पर चलतीं हैं। यदि बिजली पर चलनेवाली मशीन पैट्रोल पर, पैट्रोल पर चलनेवाली सूर्यप्रकाश पर तथा सूर्यप्रकाश पर चलनेवाली को भाप पर चलाने का प्रयास किया जाए तो मशीनें चलेंगी ही नहीं, अपितु बिगड़ जाएँगी। प्रकृति में सजीवों की शरीर रचना भी इसी प्रकार की हुई है। इनके ईंधन अर्थात् भोजन भी नियोजित एवं निश्चित हैं। उनका उपयोग भी आवश्यक एवं अनिवार्य है। उनमें परिवर्तन अनुचित है अन्यथा शरीर-रचना में गड़बड़ी होगी। अतः शाकाहारी प्राणियों द्वारा वनस्पतियों का सेवन तथा मांसाहारी प्राणियों का मांसाहार में हिंसा का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि जीवनयापन के लिए अन्न सेवन प्राकृतिक एवं अनिवार्य है।

प्राकृतिक रचना के अनुसार मनुष्य शाकाहारी ही है

प्राणियों के शरीर की रचना, उनका स्वभाव, उनके गुण धर्म आदि उनके भोजन से सम्बद्ध होते हैं। इसी प्रकार मनुष्य के शरीर की रचना, उसका स्वभाव, गुणधर्म के आधार पर उसके शाकाहारी होने का या मांसाहारी होने का निश्चय किया जा सकता है। शाकाहारी एवं मांसाहारी प्राणियों के शरीरों की बाह्य रचना, आन्तरिक रचना एवं स्वभाव आदि का तुलनात्मक अध्ययन कर मनुष्य शाकाहारी है या मांसाहारी, इसका निश्चय निम्न तुलनात्मक तालिका से किया जा सकता है—

शाकाहारी प्राणी	मांसाहारी प्राणी
१. नवजात शिशुओं की आँखें जन्म लेते ही खुली होती हैं।	१. जन्म के समय आँखें बन्द होती हैं। ३ से ८ दिन के पश्चात् आँखें खुलती हैं।
२. इनकी आवाज मृदुल अथवा प्रिय होती है।	२. इनकी आवाज कर्कश होती है।
३. इन्हें पसीना आता है।	३. इन्हें पसीना नहीं आता।
४. (सुळे) दाँत (Vomerine teeth) नहीं होते, यदि होते भीं हैं तो वे लम्बे नहीं होते।	४. दाँत नुकीले होते हैं और वे भी लम्बे होते हैं।
५. ये होठों से पानी पीते हैं।	५. जीभ से पानी पीते हैं। पीते समय आवाज आती है।
६. नाखून या खुर लम्बें नहीं होते।	६. नाखून और खुर लम्बे होते हैं।

७. पैरों की रचना ही ऐसी होती है जिससे चलते समय आवाज होती है।	७. तलवों की रचना ऐसी होती है जिससे चलते समय ध्वनि नहीं आती।
८. दाँतों में अन्तर नहीं होता, अपितु एक दूसरे के निकट होते हैं।	८. दाँतों में अन्तर होता है।
९. दूध के दाँत गिरने के पश्चात् नये दाँत आते हैं।	९. जन्म के समय दाँत होते हैं जो गिरते नहीं और नये दाँत आते नहीं।
१०. इनके आँतों की लम्बाई शरीर की लम्बाई से ८ से १० गुणा अधिक होती है। क्योंकि आँतों में बचा वनस्पतिजन्य अन्न सड़ता नहीं और आँतों में अम्ल या विष तैयार नहीं होता, Cellulose के पचाने में अधिक समय लगता है।	१०. इनकी आँतों की लम्बाई शाकाहारी प्राणियों की आँतों की अपेक्षा कम होती है, क्योंकि आँतों में रहनेवाले मांस से अम्ल तथा विष तैयार होता है, अतः पचाया हुआ अन्न शीघ्रता से बाहर फेंकने तथा अनिष्ट परिणाम से बचने हेतु आँतों की लम्बाई कम होती है।
११. हरितद्रव्यों Chlorophyll को पचाने की क्षमता होती है।	११. हरितद्रव्यों को पचाने की क्षमता नहीं होती।
१२. पाचन-संस्था में उत्पन्न Enzymes (विकट) वनस्पति तथा वनस्पति-जन्य पदार्थों को पाचन करनेवाले होते हैं। मांस को पाचन करनेवाले Enzymes (विकट) नहीं होते। इनका यकृत तथा पित्ताशय (तुलना में) छोटा होता है।	१२. पाचन-संस्था में उत्पन्न Enzymes मांस को पचाने में सक्षम होते हैं। इनके यकृत तथा पित्ताशय शाकाहारी प्राणियों की तुलना में अधिक बड़े होते हैं।
१३. इन्हें अन्धेरे में कम दिखाई देता है। आँखें बादाम के आकार की होती हैं।	१३. इन्हें अन्धेरे में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इनकी आँखें गोल होती हैं।
१४. साधारणतः रात्रि में सोते हैं तथा दिन में घूमते हैं।	१४. रात्रि में घूमते हैं और दिन में साधारणतः सोते हैं।
१५. क्रूर नहीं होते।	१५. ये क्रूर होते हैं।
१६. धोखेबाज़ नहीं होते, अपितु शक्तिवान् और बलशाली होते हैं, यथा बैल, घोड़ा, हाथी।	१६. धोखेबाज होते हैं। शक्ति कम होती है, यथा कुत्ता, बिल्ली, बाघ आदि।
१७. सुदृढ़ होते हैं।	१७. सुदृढ़ नहीं होते (जल्दी थक जाते हैं)।
१८. ये अन्य प्राणियों को मारकर नहीं खाते, चाहे कितने ही भूखे क्यों न हो।	१८. कितना ही श्रेष्ठ अन्न इनके समक्ष रख दिया जाए तो भी इन्हें मांसाहार ही

	प्रिय होता है। अन्य प्राणियों को मारकर खाते हैं।
१९. ये शिकार नहीं कर सकते।	१९. किसी भी हथियार के बिना ही शिकार कर सकते हैं।
२०. शाकाहारी दीर्घायु होते हैं।	२०. मांसाहारी अल्पायु होते हैं।
२१. इनकी श्वसनक्रिया धीमी चलती है।	२१. मांसाहारी की श्वनसनक्रिया तेज गति से चलती है।
२२. इन्हें रक्त पीने की इच्छा नहीं होती।	२२. इन्हें रक्त पीने की तीव्र इच्छा होती है।
२३. रक्त को पचा नहीं सकते।	२३. पिये हुए रक्त का पाचन कर सकते हैं।
२४. इन्हें शिकार करने की कला/विद्या बाल्यावस्था से अवगत नहीं होती।	२४. इन्हें शिकार करने की कला/विद्या बाल्यावस्था से ही अवगत होती है।
२५. ये हथियार के बिना शिकार कर नहीं सकते।	२५. इन्हें शिकार के लिए हथियार की आवश्यकता नहीं होती।
२६. इनके शरीर से ऊर्जा का उत्सर्जन बड़ी मात्रा में होता है, क्योंकि वनस्पतिजन्य अन्न अधिक ऊर्जा देता है।	२६. शाकाहार की तुलना में मांसाहार से ऊर्जा कम प्राप्त होती है, जिसके फलस्वरूप ऊर्जा का उत्सर्जन भी मांसाहारियों के शरीर से कम मात्रा में होता है।
२७. इनमें रुग्णावस्था कम मात्रा में पायी जाती है और क्षमता अधिक होती है।	२७. इनमें रुग्णावस्था अधिक मात्रा में होती है तथा कार्यक्षमता कम मात्रा में पाई जाती है।
२८. शाकाहारी मादाओं में वात्सल्य की भावना प्रभूत मात्रा में होती है। स्वयं भूखी मर जाएँगी, किन्तु अपने बच्चों को नहीं खाएँगी।	२८. मांसाहारी मादाओं में वात्सल्य का भाव तो होता है, परन्तु स्वयं भूखी होने पर बच्चों को खा जाएँगी।
२९. इनकी हड्डियाँ मजबूत होती हैं।	२९. इनकी हड्डियाँ कमजोर होती हैं।

इस प्रकार मूलतः शाकाहारी तथा मांसाहारी प्राणियों में अनेक भेद पाये जाते हैं। शाकाहारी प्राणी मांसाहारी प्राणियों से मूलतः पृथक् हैं। इन दो श्रेणियों में मनुष्य किस श्रेणी से अधिक सम्बद्ध है इस पर हम विचार करेंगे। मनुष्य निसर्गतः शाकाहारी प्राणी है। यह उपर्युक्त भेदों से स्पष्ट होता है, क्योंकि उसमें शाकाहारी प्राणियों के सब लक्षण विद्यमान हैं, यथा—आँतों का लम्बा होना, होठों से पानी पीना, दूध के दाँत गिरने के बाद फिर दाँतों का दुबारा आना,

दीर्घायु होना आदि। शाकाहारी प्राणी हथियार के बिना शिकार कर नहीं सकता, वह भी उसे सीखना पड़ता है। वह अपने शिकार को कच्चा नहीं खा सकता, अतः मनुष्य निश्चय ही शाकाहारी है। उसका शाकाहारी होना ही तर्कसंगत है। यदि वह मांसाहार करेगा तो उसका अनिष्ट परिणाम उसके शरीर पर पड़ेगा। इस अनिष्ट परिणाम का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया जा सकता है कि मांस में अम्लता अधिक होती है, जो मनुष्य के मुख की क्षारयुक्त लार को अम्लयुक्त करती है, जिससे उसकी पाचनक्रिया दूषित होती है। उससे स्वास्थ्य की हानि होती है। मांसाहारी प्राणी की विशेषताएँ क्रोध, हिंसा, धोखा देना अन्याय आदि हैं। जब मनुष्य मांस भक्षण करता है तब उसके शरीर में होनेवाले रासायनिक परिवर्तन का डॉक्टरों ने अध्ययन किया है। उन्होंने कुछ लोगों को शुद्ध शाकाहार भोजन दिया तो कुछ को मांसाहार, तब उन्हें दोनों में निम्न प्रकार के अन्तर दृष्टिगोचर हुए।

शाकाहार का मनुष्य पर प्रभाव	मांसाहार का मनुष्य पर प्रभाव
१. इन पर रोगों का प्रभाव कम रहा।	१. इन पर रोगों का प्रभाव अधिक रहा। मांस भक्षण से अनेक रोगों का उद्भव होता है यथा—लिवरफ्लूक, कृमि, टेपवर्म आदि।
२. ये दीर्घायु होते हैं। रक्तचाप (B.P.) नही बढ़ता, हृदयरोग नहीं होते।	२. ये अल्पायु होते हैं। रक्तचाप (B.P.) बढ़ता है। हृदयरोग होते हैं।
३. इनसे रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ती नहीं।	३. इनके रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ जाती है।
४. त्वचा की काँति सतेज होती है। स्वभाव दयायुक्त, प्रेमभरा, परोपकारी होता है, धोखेबाज नहीं होता। कार्यक्षमता बढ़ती है। स्थूलता बढ़ती नहीं।	४. त्वचा निस्तेज बनती है, स्वभाव क्रूरता युक्त, स्वार्थी, धोखेबाज़ बनता है। कार्यक्षमता घटती है और स्थूलता बढ़ती है।
५. दौड़ने में, शारीरिक श्रम करने में साँस फूलती नहीं।	५. शारीरिक श्रम से साँस जल्दी फूलती है।
६. मनुष्य के शरीर से उत्सर्जित होने वाली ऊर्जा आभा कहलाती है। शाकाहारी की आभा अधिक मात्रा में होती है।	६. मांसाहारी मनुष्य के शरीर से उत्सर्जित होनेवाली ऊर्जा की मात्रा शाकाहारी की तुलना में कम होती है।
७. पसीने तथा वीर्य से दुर्गन्ध नहीं आती। घाव शीघ्र भरते हैं।	७. पसीने तथा वीर्य से दुर्गन्ध आती है। घाव शीघ्र नहीं भरते।
८. बुद्धि तीव्र एवं कुशाग्र होती है। विवेक	८. बुद्धि मन्द व भ्रष्ट होती है। अविवेक

जाग्रत् होता है, मनुष्य धार्मिक बनता है।	बढ़ता है, वृत्ति नास्तिक बनती है।
९. ईश्वरभक्ति, मोक्ष प्राप्ति तथा ईश्वर प्राप्ति की अदम्य इच्छा होती है।	९. सभी बातों में नास्तिकता होती है।
१०. सत्त्वगुण की वृद्धि से सूक्ष्म शरीर, मन, बुद्धि, चित्त शुद्ध होते हैं तथा प्रवृत्ति सात्त्विक होती है।	१०. रजोगुण एवं तमोगुण की वृद्धि से सूक्ष्म शरीर में अशुद्धि बढ़ती है, दुष्प्रवृत्ति भी बढ़ने लगती है।
११. मन सन्तुष्ट रहता है।	११. मन अशान्त होता है।
१२. बुद्धि स्थिर होने से सत्यासत्य और धर्माधर्म के विवेक में वृद्धि होती है। सत्य को सत्य और धर्म को धर्म कहने की क्षमता बढ़ती है।	१२. बुद्धि अस्थिर होने से सत्यासत्य और धर्माधर्म विवेक क्षीण होता है।
१३. धैर्यवान्, यशस्वी, कीर्तिवान् होते हैं।	१३. धैर्यहीन होते हैं, यश, कीर्ति, धन प्राप्त कर नहीं सकते।
१४. इनका रक्त क्षार युक्त होता है।	१४. इनका रक्त अम्लयुक्त होता है।

आज समाज में बहुत लोग ऐसे हैं जो मांसाहार करते हैं, उनका यही हाल है। कोई मस्तिष्क के रोग से ग्रस्त है तो कोई हृदय रोग से तो कोई मधुमेह से ग्रस्त है। ये सब निस्तेज हैं। मांसाहार से बुद्धि भ्रष्ट होती है; दया, ममता, प्रेम विवेक आदि का ह्रास होता है, जिसके कतिपय उदाहरण मिलते हैं।

एक समय एक स्वार्थी व्यक्ति ने अपने साथ दो विद्यार्थियों को लिया। उन्हें वह प्रतिदिन मांसाहार कराता तथा शराब भी पिलाता था। इस प्रकार छह महीने बीते। उसने उनसे एक काम करवाने की इच्छा की। वे विद्यार्थी उस काम को करने के लिए तैयार भी हुए। उस धूर्त व्यक्ति ने उन विद्यार्थियों को अपने अध्यापक की हत्या करने को कहा। उस अध्यापक और इन विद्यार्थियों के घरेलू सम्बन्ध भी थे। परन्तु मांसाहार के कारण विद्यार्थियों का विवेक लुप्त हो गया। वे अध्यापक की हत्या करने के लिए तैयार हो गये और एक दिन उन्होंने उस अध्यापक की निर्ममतापूर्वक हत्या कर डाली। कितना बड़ा क्रूर कर्म! वस्तुतः अध्यापक के समक्ष आते ही उनके प्रति आदर का निर्माण होना स्वाभाविक है, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। इसका कारण यह था कि मांसाहार के कारण वे अपना विवेक खो बैठे। अध्यापक की अपने बेटों द्वारा की गई हत्या का समाचार उनके पिता को मिला। उन्होंने अनुभव किया कि उनके बेटे में ईमानदारी, कृतज्ञता, नम्रता, दया खत्म हो गई है। पिता को अध्यापक के उपकार का अहसास था, अतः उस पिता ने शोक एवं ग्लानिवश आत्महत्या कर ली।

मांसाहार के दुष्परिणाम

उपर्युक्त घटना से यह सिद्ध होता है कि सामान्यतः मांसाहार से मनुष्य की मानवीय वृत्तियों में नकारात्मक परिवर्तन होता है और वह हिंस्र पशुवत् आचरण करने लगता है। इस दिशा में कतिपय विद्वानों एवं डॉक्टरों ने मांसाहार के दुष्परिणामों पर अनुसन्धान किया। उनके निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं—

(क) मांसाहार के शारीरिक दुष्परिणाम

१. मांसाहार से किडनी स्टोन (मूत्रपिण्ड में पथरी का होना) तथा क्षय रोग होता है। डॉ० रामलिंग स्वामी (नई दिल्ली) ने कहा है कि मांस एवं मद्य सेवन ही भारत के सर्वनाश का मुख्य कारण है।

२. अठारह वर्षों के अनुसंन्धान का निष्कर्ष यह है कि अण्डे में ३०% डीडीटी (विष) होता है। (कृषिविभाग फ्लोरिडा अमेरिका)

३. रक्तचाप (B.P.) तथा हृदयरोग का कारण अण्डों का सेवन है, अण्डों में कोलेस्ट्रोल की मात्रा अधिक होती है, जिससे हृदय रोग, रक्तचाप, किडनी स्टोन (पत्थरी), पित्ताशय में स्टोन होते हैं। फल तथा सब्जियों में कोलेस्ट्रोल नहीं पाया जाता। (डॉ० केथेरॉइन निम्मो D.C.R.N.O.C. कैलिफोर्निया)

४. अण्डों के कोलेस्ट्रोल से रक्त-वाहक नलिकाओं में कठोरता आती है तथा व्रण भी होते हैं। (डॉ० जे०एम० विलिंग्ज, इंग्लैण्ड)

५. **अण्डों से पित्ताशय में पथरी**—एक अण्डे में लगभग चार ग्रेन कोलेस्ट्रोल होता है, अतः अण्डों के सेवन से रक्त में कोलेस्ट्रोल बढ़ता है, जिससे पित्ताशय में पथरी बनने लगती है तथा अनेक रोग भी उत्पन्न होते हैं।(डॉ० रोबर्ट तथा प्रो० डेविडसन, इंग्लैण्ड)

६. **अण्डों से इक्जीमा Eczema और लकवा (पक्षाघात)** अण्डों का द्रव (बल्क) रोगों का निर्माण करता है। एक प्रयोग में जानवरों को अण्डों का सफेद बल्क खिलाया गया। परिणामतः उन्हें पक्षाघात हुआ और उनकी त्वचा भी सड़ने लगी।(डॉ० रॉबर्ट ग्रास, इंग्लैण्ड) अण्डों के सफेद बल्क में यव्हीडन नामक तत्त्व होता है जो Eczema (त्वचा रोग) का निर्माण करता है।(R. Williams, England)

७. **अण्डों से पेट में सड़न**—अण्डों में केल्शियम कम मात्रा में तथा कार्बोहाइड्रेट्स का अभाव होता है, जिस कारण बड़ी आँत में सड़न हो सकती है।(Dr. E.V. Mcellons)

८. **अण्डे आंतों के कीटाणुओं को विषैला बनाते हैं**—मनुष्यों की आँतों में सूक्ष्म कीटाणु होते हैं। अण्डे उन कीटाणुओं को विषैला बनाते हैं, जिनसे अनेकविध रोग उत्पन्न होते हैं। अधिक मात्रा में अण्डे पैदा करने की लालसा से उनमें नानविध रोग उत्पन्न होते हैं।(Dr. J.E.R. Medona,

England)

९. **अण्डों से क्षयरोग तथा पेचिश**—मुर्गी के चूजों को अनेक रोग होते हैं। अण्डों का सेवन मनुष्य के रोगों का मुख्य कारण है, यथा—क्षयरोग, पेचिश आदि। इन रोगों के कीटाणु अण्डों में होते हैं जो रोगों का निर्माण करते हैं।(Dr. Robert Grass, England)

१०. अण्डों में सलमोनेला नामक भयंकर विष होता है जो अनेक रोगों का कारण होता है तथा उससे मनुष्य की अकाल मृत्यु भी होती है। (ब्रिटिश स्वास्थ्यमन्त्री श्रीमती एकवीना क्यूरी)

११. **अण्डों का सेवन क्रूरता एवं बर्बरता है**—प्रकृति के नियम अटल होते हैं। जैसा बोया वैसा काटा। दूसरों की हत्या कर स्वयं सुखी होना असम्भव है, अतः अन्य जीव तथा उनके अण्डों को खाना क्रूरता है, क्योंकि उससे अन्य जीवों का संहार होता है।(Dr. J.W. Jagsuriya Banka)

१२. अन्तरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन ने १६० रोगों की पहचान की है। वे सभी नाना प्राणियों के मांस भक्षण से तथा मात्र उनके सम्पर्क से भी हो सकते हैं, जिन्हें जूनासेस कहते हैं। इनमें से अधिकांश रोगों का उपाय आज भी उपलब्ध नहीं है।(मासिक पत्रिका, 'परोकारी' १९९१)

१३. मांसाहार से शरीर में यूरिक अम्ल में बढ़ोतरी होती है, क्योंकि मांस में १९% तथा वनस्पति में 0.४% और दूध में यूरिक अम्ल का अभाव होता है।

१४. इंग्लैण्ड की नेशनल हैल्थ सर्विसेस नामक संस्था जहाँ एक तरफ एक मांसाहारी के स्वास्थ्य रक्षा के लिए आजीवन ९०,००० डालर खर्च करती है तो वहाँ दूसरी ओर एक शाकाहारी के स्वास्थ्य रक्षा हेतु आजीवन मात्र १९,००० डालर खर्च करती है।

१५. **आवश्यकता से अधिक प्रोटीन का सेवन शरीर को हानि पहुँचाता है।** अमरीका की फिजियोलॉजिकल सोसायटी के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ० चिटेण्ड्रेन ने अपने प्रयोग के द्वारा यह सिद्ध किया है कि बोयट के द्वारा निर्धारित ११८ ग्राम प्रोटीन प्रति मनुष्य, प्रतिदिन की आवश्यकता नहीं है। उसके विपरीत उससे कम प्रोटीन पर अधिक बल देते हुए उसकी मात्रा ३० से ४० ग्राम तथा कठिन परिश्रम करनेवाले मनुष्यों के लिए ५० से ५५ ग्राम प्रतिदिन निर्धारित की है।

१६. मांसाहार के पक्ष में वकालत करनेवाले मेक कॉलम ने एक तर्क दिया है कि मांस में लाइसिन ६ से ७% है। लाइसिन युक्त प्रोटीन से शरीर सुरक्षित रहता है। बचपन में लाइसिन का दूध के द्वारा संग्रह होता है। दूध में इसकी मात्रा ५.९५% है। वृद्धावस्था में लायसिन की पूर्ति फल, शाक तथा अन्न से होती है, जिसकी मात्रा १ से ३% होती है। लाइसिन की

कमी की पूर्ति यथासमय, यथावकाश होती है तो अतिरिक्त लाइसिन से क्या लाभ है ?

१७. अफ्रिकन डॉक्टरों का स्पष्ट रूप से यह मत है कि मांसाहार की तुलना में शाकाहार में हृदय रोग के प्रतिकार की क्षमता अधिक होती है। मांसाहारियों को हृदय रोग, केन्सर (कर्करोग), किडनी आदि से सम्बन्धित भयंकर रोग शाकाहारियों की तुलना में अधिक हो सकते हैं। मांसाहारियों को सदा कब्ज रहता है, जिससे अनेक रोग स्वयं हो जाते हैं।

१८. ब्रिटेन के प्रसिद्ध डॉ० एम० रॉक ने सर्वेक्षण द्वारा यह सिद्ध किया है कि मांसाहारियों की अपेक्षा शाकाहारियों का शरीर स्वस्थ, निरोगी तथा हृष्ट-पुष्ट होता है तथा स्वभाव भी शान्त, सात्विक और चिन्तनशील होता है।

१९. विश्वविख्यात आकाशवाणी बी०बी०सी० लन्दन के साप्ताहिक कार्यक्रम में मांसाहार के सम्बन्ध में भी यह चेतावनी दी गई थी कि लोग मांसाहार से दूर रहें, अन्यथा हृदय रोग के साथ-साथ केन्सर रोग आदि प्राणघातक रोगों का शिकार होना पड़ेगा।

२०. अमेरिका के एक विशेषज्ञ डॉ० विलियम सी०राबर्टस का मत है कि अमेरिका में मांसाहारी लोगों में हृदय रोग अधिक पाया जाता है। इसके विपरीत शाकाहारियों में हृदय रोग अल्प मात्रा में है।

२१. ब्रेनबग नामक काँटेवाला पशु खाने से मांसाहारियों के शरीर में कीटकों का प्रभाव बढ़ता है, जिससे मनुष्य पागल भी हो सकता है।

२२. पशु, पक्षी और मछलियाँ प्रभूत मात्रा में ट्यूमर तथा अन्य प्रकार के रोगों से ग्रस्त होते हैं। इनका मांस खाने से वे रोग भी मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

२३. १९८५ के नोबेल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक डॉ० माइकेल एस० ब्राऊन तथा डॉ० जोसेफ गोल्डस्टोन ने सिद्ध किया है कि मांस तथा अण्डों के खाने से हृदय रोग होता है, क्योंकि इनसे कालेस्ट्रोल की मात्रा में वृद्धि होती है।

२४. श्री टॉलस्टॉय कहते हैं—मैं मांसाहारियों से यही कहना चाहता हूँ कि यदि उन्हें सदाचारी बनना हो तो उन्हें मांसाहार का त्याग करना होगा।

२५. विश्वविख्यात विचारक बर्नार्ड शॉ शाकाहारी थे।

२६. मांस का सेवन पाचन के लिए भारी है—मांसाहार पाचन संस्था एवं पाचन क्रिया को मन्द बनाता है। मांस में आम्ल अधिक मात्रा में होता है, जो क्षारयुक्त लार को अम्लयुक्त करता है, जिससे पाचन क्रिया में गड़बड़ी हो जाती है। उसके बिगड़ने से कई रोग पैदा होते हैं। आज के डॉक्टर भी अण्डे और मांस के सेवन को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक कह रहे हैं, क्योंकि प्रयोगों और अनुसन्धान द्वारा उन्होंने उसे सिद्ध किया है। इसीलिए अण्डे तथा मांस भक्षण को पाप कहा जाता है, जो मनुष्य के

लिए हानिकारक है।

२७. **मांसाहार रक्त में अम्ल की बढ़ोतरी करता है।** मनुष्य का रक्त क्षारयुक्त है उसका क्षारयुक्त रहना ही उसके लिए स्वास्थ्यकारक है। यदि वह अम्लयुक्त हो जाए तो मनुष्य रोगों से आक्रान्त हो सकता है। मांस के भक्षण से उसकी अम्लता मनुष्य के रक्त में अम्लता को बढ़ाती है, जो अनेकों रोगों का कारण है। इस विषय पर प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में दीर्घ अनुसन्धान किया जा चुका है, जिसका निष्कर्ष है कि मानव स्वास्थ्य के लिए उसके रक्त का क्षारयुक्त होना लाभदायक है।

२८. **मांस तथा दूध या दुग्धजन्य पदार्थ के एक साथ खाने से अनेक रोगों का प्रादुर्भाव होता है।** आयुर्वेद में यह प्रतिपादित किया गया है कि अनेक रोगों का उद्भव, विरुद्ध आहार के सेवन से होता है। विरुद्ध धर्म के अन्न का एक साथ सेवन करना विरुद्ध आहार कहलाता है। मांस के साथ दूध और दुग्धजन्य पदार्थों का खाना विरुद्धाहार है। जिसमें चर्मरोग, यथा श्वेतकुष्ठ, कुष्ठ आदि हो सकते हैं।(नया वैज्ञानिक शोध—ले० प्रदीप मुखोपाध्याय, साप्ताहिक सार्वदेशिक पत्रिका, ०२.१८.१९८७)

साइमोनेटन का यही निष्कर्ष है कि मांसाहारी तथा व्यसनी लोगों के शरीर से जो अदृश्य विकरण के तरंगों का निर्माण होता है वह शाकाहारी तथा सदाचारी लोगों के तरंगों की तुलना में कम होता है। वे रोगी के तरंगों के सदृश ही होते हैं, अर्थात् मांसाहारी एवं व्यसनी लोग रुग्ण ही होते हैं। केन्सर रोगग्रस्त रुग्णों के विकरण तरंगों का दौर्घ्य ४८७४ Ag (आंग्रस्ट्राम) होता है और योगियों में वह अधिक होता है।

जोविक ने स्वनिर्मित उपकरणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि विकरण तरंग–दौर्घ्य मांस तथा अण्डों में आंग्रस्ट्राम ६५०० से कम होता है और फल तथा शाक में वह १०,००० आंग्रस्ट्राम अधिक होता है।

जिस अन्न का ग्रहण या सेवन किया है उसका तरंग दौर्घ्य ६५०० Ag से अधिक हो तब ही वह शरीर को स्वस्थ्य रख सकता है, अन्यथा नहीं।

(ख) मांसाहार के मानसिक दुष्परिणाम

जिस प्रकार स्थूल शरीर का स्वास्थ्य त्रिदोष (वात, पित्त और कफ) पर आधारित है। उसी प्रकार सूक्ष्म शरीर का स्वास्थ्य त्रिगुण (सत्त्व, रज और तम) पर आधारित है। मांसाहार से रजोगुण एवं तमोगुण में वृद्धि होती है, जिससे मानसिक अस्वस्थता में वृद्धि होती है। **'जैसा खाए अन्न, वैसा बने मन'** इस उक्ति के अनुसार मन का स्वास्थ्य आहाराश्रित है। मांसाहार से मन चंचल, अशान्त, बेईमान, धोखेबाज, प्रमादी और अहंकारी बनता है। मन की प्रवृत्ति के अनुरूप हार्मोन–सेक्रेशन (शरीर से सम्प्रेरकों का स्रवण) होता है, अतः मन के बिगड़ने से शरीर के Endocrine Gland (वाहिनी विरहित ग्रन्थि) पर विपरीत

प्रभाव पड़ता है, जिससे कई रोग उत्पन्न होते हैं। मांसाहारियों का मन कभी भी अध्यात्म, परमार्थ, सच्ची ईश्वरभक्ति आदि की ओर प्रवृत्त नहीं हो सकता, अपितु उसके विपरीत, उनका मन सदा अस्थिर ही रहता है। आज सारे संसार में गुनाहों में जो बढ़ोतरी हो रही है, आत्महत्या की संख्या में वृद्धि हो रही है, उन सबका मूल कारण मन की अस्वस्थता में निहित है। आज का मनुष्य दुःखी है। उसे सब भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं, फिर भी दुष्प्रवृत्ति के फलस्वरूप ईर्ष्या, द्वेष, कामुकता, मत्सर, लोभ आदि के कारण वह दुःखी है। इतना ही नहीं वह आत्महत्या के लिए भी प्रवृत्त होता है, अतः मात्र सात्विक अन्न ही मनुष्य को धैर्य प्रदान कर सकता है। सत्याचरण, धार्मिक-आचरण, पारमार्थिक अध्यवसाय मन को शान्ति प्रदान करने में सक्षम है। धर्म, सत्य और परमार्थ आदि का मार्गदर्शन करना बुद्धि का ही काम है।

पाश्चात्य देशों के शाकाहारी विचारशील विद्वान् तथा महापुरुष ही इतिहास में अपने नाम अमर कर गये हैं। यथा—अरस्तू (अरिस्टॉटल), डार्विन, आइंस्टीन, टॉलस्टॉय, न्यूटन, विची, बेंजामिन, फ्रैंक्लीन आदि।

(ग) मांसाहार का बुद्धि पर दुष्परिणाम

भौतिक शरीर स्थूल जड़ तत्त्व है, किन्तु बुद्धि सूक्ष्म जड़ तत्त्व है। बुद्धि सत्यासत्य, योग्यायोग्य आदि का निश्चय करनेवाली है। वह मन की पथप्रदर्शिका है, अतः उसे टेस्टर कहा जा सकता है। सब रोगों का मूल बुद्धि में ही निहित है। महर्षि चरक ने कहा है '**प्रज्ञापराधो हि मूलं सर्व रोगाणाम्**'। अज्ञान ही बुद्धि की बीमारी है, अविवेक दोष है। अविवेक ही सब शारीरिक और मानसिक रोगों का मूल है। अविवेक से मनुष्य पागल हो सकता है, क्रूर हो सकता है तथा आत्महत्या भी करता है। शुद्ध बुद्धि और प्रज्ञा बुद्धि की स्थिरता मांसाहार से कदापि सम्भव नहीं।

इन्द्रियदोषात् संस्कारदोषाः। संस्कारदोषात् च अविद्या॥

(घ) मांसाहार एवं आत्मा का स्वास्थ्य

आत्मा ही जीवन का कारण है। वह चेतन है। शरीर, मन और बुद्धि जड़ हैं, स्थूल हैं और सूक्ष्म भी हैं, किन्तु आत्मा इन सबकी अपेक्षा सूक्ष्म तथा चेतन है। उसके साधन (शरीर) जब मांसाहार के कारण बिगड़ जाते हैं, तब उसे क्लेश ही होते हैं। मनुष्य जो कुछ अनुचित करता है, उसका फल उसकी आत्मा को ही भुगतना पड़ता है। आत्मा तो आनन्द या परमानन्द की आकांक्षी है और उसका ऐसा होना स्वाभाविक है, किन्तु साधनों (शरीर) के बिगड़ जाने से मनुष्य भोगवादी बन जाता है। सच्चा आनन्द तो त्याग में ही है, भोग में नहीं, दया में है, क्रूरता में नहीं, ईमानदारी में है, बेईमानी में नहीं, परोपकार में हैं, स्वार्थ में नहीं। मांसाहार से जो-जो दोष मन, शरीर और बुद्धि आदि में आते हैं

उनके कारण आत्मा को जो वांछित है वह उसे मिलता नहीं, अतः उसे क्लेश ही होता है। मनुष्य का अन्तिम ध्येय ईश्वर के सान्निध्य में उपलब्ध परमशान्ति और परमानन्द है। वे उसे मांसाहारजन्य दोषों के कारण अनुपलब्ध होते हैं।

(ङ) मांसाहार तथा सामाजिक व्यवस्था

मांसाहारजन्य दोष एवं विकृतियाँ समाज-व्यवस्था में भी बाधाएँ और दोष उत्पन्न करती हैं, जिससे समाज में व्यवस्था, शान्ति, परस्पर प्रेम, स्नेहभाव क्षीण होते जाते हैं और समाज अव्यवस्थित तथा अस्थिर बनता है।

(च) मांसाहार तथा आर्थिक व्यवस्था

मांसाहार के कारण आर्थिक व्यवस्था भी बिगड़ जाती है। मांस के लिए प्राणियों की हत्या की जाती है, जिससे पशुजन्य दूध, खाद आदि पदार्थ का अभाव होता है। मांसाहार में घी, तेल और मसालों का प्रयोग भी अधिक मात्रा में होता है। मांसाहार के साथ-साथ शराब का प्रयोग भी बढ़ जाता है। मांस और शराब आदि के सेवन से मनुष्य व्यसनाधीन, प्रमादी और आलसी बनता है। जिसका अन्त कङ्गाली में होता है। फलस्वरूप राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था भी प्रभावित होती है।

(छ) मांसाहार एवं पुनर्जन्म

पुनर्जन्म का होना निश्चित है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह सिद्ध किया जा चुका है। मृत्यु के समय स्थूल शरीर का त्याग कर आत्मा सूक्ष्म शरीर एवं प्राण के साथ निकल जाती है। स्थूल शरीर माता-पिता से आता है। सूक्ष्म शरीर में प्रवृत्ति बीजरूप में मुद्रित रहती है मानो टेप की जाती है। अतः इस जन्म के आहार, विचार आदि से जो प्रवृत्ति बनती है वही अगले जन्म में आत्मा के साथ स्थूल शरीर में प्रविष्ट होती है। अतः मनुष्यों का यश, अपयश,कीर्ति, अपकीर्ति, इतना ही नहीं जन्म कहाँ होगा, यह भी प्रवृत्ति पर ही निर्भर करता है।

हिंसक प्रवृत्ति हिंसक प्राणियों की ओर ही ले जाएगी, अतः इसमें सन्देह नहीं कि मांसाहार अगले जन्म के लिए भी घातक ही होता है। जन्म के साथ प्रत्येक व्यक्ति सूक्ष्म शरीर में एक धरोहर लिए हुए आता है। इस धरोहर के अनुसार ही प्राणियों को भिन्न-भिन्न शरीर प्राप्त होते हैं। अपने-अपने स्वभावानुरूप ही उसे किये हुए कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। प्राणियों की आत्मा मनुष्यों की आत्मा से भिन्न नहीं होती, दोनों समान ही होती है। यदि मनुष्य को किसी ने बलात् काट दिया तो कैसे प्रतीत होगा। इसका भी विचार करें। प्राणियों को भी वैसा ही महसूस होगा। यदि अगला जन्म किसी प्राणी का मिले और वैसे ही हाल अपना भी होवे तो कैसा अनुभव होगा ? इस पर भी विचार अवश्य करें। यदि मांसाहार बन्द हो जाए तो बूचड़खाने (पशुहत्या गृह) स्वयं बन्द हो जाएँगे।

मांसाहार एवं मनुष्य-जीवन का लक्ष्य

मनुष्य-जीवन का एक स्वाभाविक लक्ष्य होता है। विवेक उसका निर्धारण करता है। उसके लिए सुख, शान्ति, बुद्धि की स्थिरता का होना आवश्यक है। किन्तु मांसाहारी लोगों को उनके जीवन के लक्ष्य का पता ही नहीं होता। लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ आवश्यक है, अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति तभी सम्भव है जब मनुष्य का स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर स्वस्थ हो। मांसाहार के जनित तमोगुण के कारण जीवन का लक्ष्य पता न होने से पुरुषार्थ की प्राप्ति सम्भव नहीं। जिस आहार से जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव नहीं, उस आहार से क्या लाभ ?

मांसाहार एवं पर्यावरण सन्तुलन

'नेचर इज ए परफेक्ट क्रिएशन' Nature is a perfect creation यह सर्वमान्य उक्ति है। प्रकृति में पशु-पक्षी, वनस्पति, वायु आदि का एक सन्तुलित, व्यवस्थित, नियमबद्ध चक्र है। ये सब अन्योन्याश्रित हैं। इनमें विविधता होते हुए भी एक उत्कृष्ट समन्वय भी है। इनकी संख्या, मात्रा में यदि बदलाव आया तो यह सन्तुलन बिगड़ जाएगा। इसका परिणाम मनुष्य को भुगतना होगा। मांसाहार हेतु प्राणि विशेष की हत्या की जाती है और कुछ पशु-पक्षी पाले जाते हैं। इसका परिणाम यह है कि कतिपय पशु-पक्षी की प्रजातियाँ लुप्त होती दिखाई देती हैं। बाघ, सिंह, मोर, साँप, मेंढ़क, मृग आदि की कई प्रजातियाँ अब लुप्त हो रही है, अतः उन्हें सुरक्षा प्रदान करने की ओर ध्यान दिया जा रहा है। जापान, जर्मनी में अब मेंढक को सुरक्षा प्रदान की जा रही है, क्योंकि इनका अभाव पर्यावरण संतुलन को प्रभावित कर रहा है। हवा को शुद्ध रखने तथा जल की शुद्धि में प्राणियों का विशेष महत्त्व है, यथा साँप विषैला है तो भी वह वायुमण्डल की विषैली वायु को विषमुक्त करता है। चील, गिद्ध आदि साँप की संख्या का नियन्त्रण करते हैं। भौतिकशास्त्र का सिद्धान्त है कि शब्द (ध्वनि) नष्ट नहीं होती। मांस प्राप्ति हेतु जिन प्राणियों की हत्या की जाती है, उनकी करुणाभरी आवाज वातावरण में सुरक्षित रहती है जो वातावरण को भी दूषित करती है। इसी वातावरण-दोष का परिणाम है—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल, भूकम्प आदि। अतः मांसाहार हानिकारक ही है।

मांसाहार एवं राज्य-व्यवस्था

जिस देश में मांसाहार बड़ी मात्रा में होगा उस देश की राज्य-व्यवस्था सदोष होती है। गुनहगारी, बेईमानी, धोखाधड़ी और अशान्ति के कारण वहाँ अनुशासन का अभाव होगा। चोरी, खून-खराबा, बलात्कार आदि अपराधों में बढ़ोतरी होगी। भारत देश पहले शाकाहारी ही था। अब मांसाहार बढ़ने से सरकार ने बूचड़खाने (पशुहत्या गृह) के लाइसेन्स दिये हैं, फलस्वरूप अपराध,

धोखाधड़ी दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। अतः मांसाहार राज्य-व्यवस्था के लिए भी घातक ही है। राजकर्त्ता यदि मांसाहारी होंगे तब तो स्थिति अधिक बिगड़ जाएगी। अशान्ति, अराजकता, असुरक्षा, दुःख और अनुशासनहीनता अधिक बढ़ेगी।

मांसाहार और मनुष्य का कर्त्तव्य

ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट निर्माण (Creation) मानव जाति है। मनुष्य को प्रकृति से मिले हुए यन्त्र, अर्थात् शरीर, मन, बुद्धि सर्वोपरि हैं। उनकी क्षमता भी सर्वश्रेष्ठ है। इसके अतिरिक्त ईश्वर ने मनुष्य को ज्ञान, संस्कार, संस्कृति आदि उदात्त विषयों को प्रदान कर उनका यथोचित्त उपदेश भी किया है। सर्वश्रेष्ठ, बलवान तथा ज्ञानयुक्त होने से मनुष्य को प्रकृति का संरक्षक (Care taker) होना चाहिए। उसको चाहिए कि सबको न्यायोचित जीवनयापन करने में, विकास में, प्रजोत्पादन में तथा संतुलन हेतु कही भी बाधा खड़ी न करे, अपितु हेतुसिद्धि के लिए पोषक वातावरण का निर्माण करने में सहायक बने। यह मात्र अपेक्षा ही नहीं अपितु इस ओर ध्यान दें कि ऐसा नियम ही बन जाए कि जिसमें एक व्यक्ति का हित है, उसी में सभी मनुष्य जाति का हित और सभी प्राणिमात्र का भी हित होना चाहिए। ध्यान रहे, यदि अन्य प्राणी दुःखी हैं, अस्वस्थ हैं, तब उसका प्रतिबिम्ब मानव जीवन पर भी पड़ता है। तथा मनुष्य भी दुःखी और बेचैन होता है। प्रदूषण का निर्माता मनुष्य ही है और प्रदूषण से मानवीय अस्तित्व भी संकट में पड़ सकता है। इस चेतावनी को ध्यान में रखकर अब प्रदूषण निवारण के प्रयास किये जा रहे हैं। जंगल कटाई के दुष्परिणाम अब सामने आ रहे हैं, तथा मानव जाति उन्हें भुगत रही है। इसका उपाय वृक्षारोपण है जिसका महत्त्व मनुष्य भी जान गया है। अतः अनेक स्थानों पर वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। मानव को प्रकृति के नियमों के अनुरूप ही चलना अनिवार्य है। प्रकृति को संभालना उसका कर्त्तव्य बनता है। मनुष्य शाकाहारी ही है और उसे शाकाहारी ही बने रहना चाहिए। यदि वह मांसाहारी बन जाए तो भूमण्डल में प्राणियों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। फिर वह समय दूर नहीं कि मांसाहार के लिए मनुष्य, मनुष्य का ही प्रयोग करेगा। अतः प्रकृति का सन्तुलन बनाए रखना होगा। कहावत है— 'जो दूसरों का मकान जलाता है, उसका भी मकान जलानेवाला कोई होता है।' पशु-पक्षियों की संख्या के आधिक्य से पर्यावरण सुधरता है। [महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत 'गौकरुणानिधि' पुस्तक इस दृष्टि से विशेष रूप से पठनीय है।]

मांसाहार एवं मांसाहारी के विषय में अमरीका, इंग्लैण्ड आदि पाश्चात्य देशों के अनुभव

भौतिकवाद की शरण में आकर पाश्चात्य देशों ने प्रकृति का सन्तुलन, प्रकृति के नियम आदि को भुलाकर मांसाहार किया, उसका प्रचार-प्रसार भी

किया। उन्हें इसके दुष्परिणाम भी भुगतने पड़ रहे हैं, अतः वे भी अब शाकाहार की ओर मुड़ रहे हैं। कहावत है—'देर है, लेकिन अन्धेर नहीं।'

'नान्यः पन्थाः'। इस तत्त्व के अनुसार आप कुछ भी कर सकते हैं, किन्तु परिणाम तो आप को ही भुगतने पड़ते हैं। उचित एवं सत्य मार्ग पर चलने के फल कल्याणकारी ही होते हैं। पाप के परिणाम मात्र क्लेशदायी ही होते हैं और वे आपके सम्मुख स्पष्ट हैं। इसका अनुभव अब पाश्चात्य देशों को भी हो रहा है, क्योंकि वहाँ अब शाकाहार के पक्ष में आन्दोलन छेड़ा जा रहा है। वहाँ के विचारक, डॉक्टर आदि भी अब कह रहे हैं कि मनुष्य का आहार मात्र शाकाहार ही है।

शाकाहार के तामस एवं राजस आहार का निषेध

यदि शाकाहार को मनुष्य जाति का स्वाभाविक, प्राकृतिक सर्वोत्तम आहार माना जाए तो भी शाश्वत सुख, शान्ति और आनन्द आदि की प्राप्ति हेतु मनुष्य को राजसिक एवं तामसिक आहार को वर्ज्य करना होगा और मात्र सात्विक आहार को ही प्रधानता देनी होगी। श्रीमद्भगवद्गीता में सात्विक आहार की महिमा एवं उपयुक्तता का वर्णन है। राजसिक आहार से रजोगुण तथा तामसिक आहार से तमोगुण की वृद्धि होती है। प्याज, लहसुन, नमक, तले हुए पदार्थ, मसाले, खट्टे तथा कड़वे पदार्थ रजोगुण-तमोगुण में वृद्धिकारक हैं। वे मन को चंचल व अधिक बहिर्मुख करते हैं, अतः उनका सेवन निषिद्ध है। योगीजन इन सबका त्याग करते हैं। दूध, फल, अन्न का सेवन ही उचित है।

मांसाहारी लोगों की युक्तियों का निराकरण

(अ) मांस में (वनस्पति की अपेक्षा) प्रोटीन अधिक होते हैं, जो शरीर के लिए आवश्यक होते है, अतः मांसाहार आवश्यक एवं उपयुक्त है।

यह युक्ति निराधार है—

१. सब कार्बोनिक पदार्थों (Organic matters) का प्रथीनों का (Protein) निर्माण वनस्पति से ही होता है। पशु-पक्षी अपने अन्न , एवं प्रथिनों का निर्माण स्वयं नहीं कर सकते। उन्हें अन्न और प्रथीनों के लिए वनस्पतियों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। दालों Pulses में प्रोटीन सर्वाधिक मात्रा में होते हैं।

२. मनुष्य में वनस्पतिजन्य प्रोटीन का पाचन सहजता से होता है, पशु-पक्षीजन्य प्रोटीन का नहीं। पशु-पक्षीजन्य प्रोटीन से मनुष्य में अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

३. पशु, पक्षी, मानव आदि के शरीर की वृद्धि की गति धीमी होती है, जो प्रतिदिन के भोजन से पर्याप्त मात्रा में हो सकती है। अतः प्रतिदिन भोजन

में प्रोटीन का अल्पमात्रा में होना पर्याप्त है, अधिक मात्रा की आवश्यकता नहीं है। कार्बोहाइड्रेट्स Carbohydrates की आवश्यकता प्रोटीन की अपेक्षा अधिक होती है, किन्तु मांस में कर्बोदक का अभाव होता है।

४. आवश्यकता से अधिक मात्रा में प्रोटीन का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है, अतः मांसाहार, जिसमें प्रोटीन की मात्रा आवश्यकता से अधिक है, मनुष्य के स्वास्थ्य हेतु हानिकारक है। इसीलिए अपने दैनिक भोजन में रोटी, चावल, शाक अधिक तो दाल कम होती है।

(ख) मांसाहार बलवर्धक है

यह युक्ति भी विज्ञान की ओट में दी जाती हैं जो उचित नहीं है। कार्बोहाइड्रेट्स Carbohydrates कर्बोदक ही शरीर में ऊर्जा के स्रोत हैं, जो मात्र वनस्पतियों से ही प्राप्त होते हैं, मांस से नहीं। शरीर की चेष्टा एवं श्रम के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है जो अधिक मात्रा में घृत (घी), बादाम, मूँगफली आदि से उपलब्ध होती है। शाकाहार तथा मांसाहार से उपलब्ध भिन्न-भिन्न अन्न व मांस की तुलनात्मक तालिका प्रस्तुत की जाती है, जो भारत सरकार द्वारा प्रकाशित हैल्थ बुलेटिन नं० २३, अश्विन संवत् २०२७ के '**जनज्ञान**' मासिक पत्रिका से उद्धृत है—

पदार्थ	प्रोटीन	चिकनाई	खनिज	कर्बोदक	फास्फोरस	कैलशियम	लोह	कैलोरी
शाकाहार								
गेहूँ का आटा	१२.१	१.७	१.८	७२.२	०.३२	०.०४	७.३	३५३
चावल	८.५	०.६	०.९	७७.४	०.२८	०.०१	२.८	३४९
मूँग	२४.००	१.३	३.६	५६.६	०.२८	०.१४	८.४	३३४
उड़द	२४.००	१.४	३.४	६०.३	०.३७	०.२०	९.८	३००
सोयाबीन	४३.२	१९.४	४.६	२२.९	०.६९	०.२४	११.५	४३२
बादाम	२०.८	५८.९	२.६	१०.५	०.४९	०.२३	३.५	६५५
मूँगफली	३१.५	३९.८	२.३	१९.३	०.४४	०.०५	०.३	५६१
पिस्ता	१९.८	५३.५	२.८	१६.२	०.४३	०.१४	१३.७	६२६
घृत (घी)	१.०५	९८.०	--	३३.०	०.०९	०.१२	०.३	९००
दूध पाऊडर	३८.००	०.१	६.८	१५.००	१.००	१.३७	१.४	३५७
मांसाहार								
अण्डे	१३.३	१३.३	१.००	--	०.२२	०.०६	२.१	१७३
बकरी का मांस	१८.५	१३.३	१.३	--	.०१५	०.१५	२.५	१९४
मछली	२२.६	०.६	०.८	--	०.१९	०.०२	०.९	९१

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिक ऊर्जा शाकाहार से ही प्राप्त होती है। बादाम और मूँगफली ऊर्जा के स्रोत हैं, इतना ही नहीं, शेष आवश्यक तत्त्व भी शाकाहार से ही प्राप्त होते हैं, यथा कैल्शियम, विटामिन्स आदि। अतः शक्ति प्राप्ति हेतु शाकाहार का ही सेवन करना चाहिए। शाकाहारी पहलवान ही शक्तिशाली एवं दीर्घायु होते हैं। आधुनिक पर्यावरण के अनुसन्धान से यह सिद्ध हुआ है कि वनस्पतियाँ ही ऊर्जा के उत्तम स्रोत हैं। उन पर आश्रित शाकाहारी प्राणी प्राथमिक उपभोक्ता Primary Consumers हैं। शाकाहार पर निर्भर मांसाहारी प्राणियों को द्वितीय उपभोक्ता Secondary Consumers कहा गया है। मांसाहारी प्राणियों पर जीवन यापन करनेवाले प्राणियों को तृतीय उपभोक्ता Tertiary Consumers कहा गया है। अन्न मूल्य Food Value प्राथमिक उपभोक्ता से द्वितीय, तृतीय उपभोक्ता इस दिशा में क्रमशः कम-कम होता जाता है और Decomposer में समाप्त हो जाता है। इसे Energy pyramid 'ऊर्जा शंकु' के रूप में प्रस्तुत करते हैं

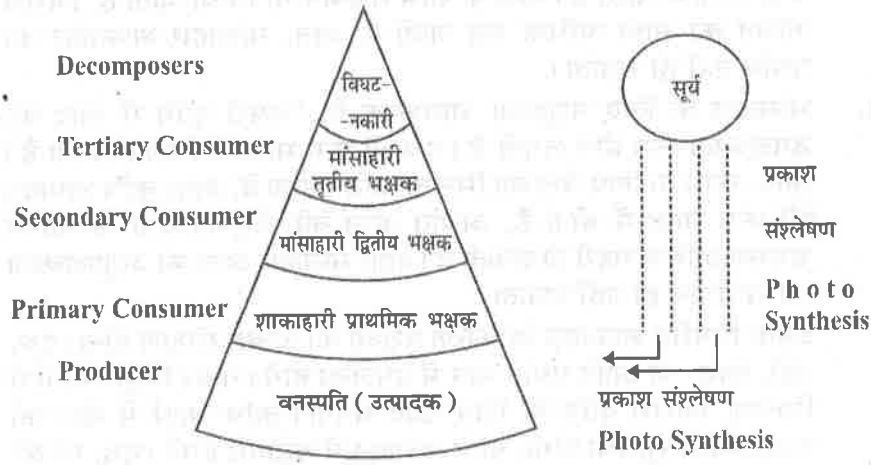

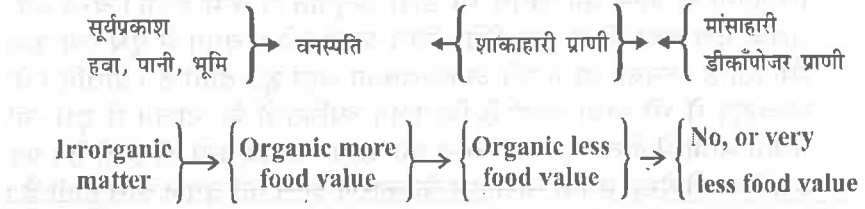

(ग) अनाज के अभाव में समस्या का समाधान मांसाहार

जनसंख्या बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है, फलस्वरूप अनाज की कमी

उसी अनुपात में बढ़ती जा रही है। इस समस्या के समाधान के लिए मांसाहार के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं, किन्तु यह कहना भी निराधार ही है, क्योंकि—

१. जहाँ अन्न उपलब्ध नहीं है, वहाँ पशुओं का मांस खाएँ, परन्तु पशुओं का खाद्य क्या है ? बिना वनस्पति के पशु जियेंगे कैसे ? समुद्र में भी जलचर वहाँ उपलब्ध वनस्पतियाँ खाकर ही जीते हैं, यथा शैवाल आदि। टुण्ड्रा प्रदेश में भी प्राणी वनस्पति खाकर ही जीते हैं। हिमाच्छादित प्रदेश में वनस्पतियाँ ढकी हुई होने से दिखती नहीं। अर्थात् वहाँ भी वनस्पति ही मुख्य खाद्यान्न है, फिर हम वनस्पतियों का उपयोग कर अपनी समस्या का समाधान क्यों न कर सकेंगे ?

२. मांसाहारी लोग मांस में मसालों का प्रयोग कर उसे स्वादिष्ट बनाते हैं। उसके साथ ही उन्हें रोटी, चावल आदि वनस्पतिजन्य पदार्थ भी अधिक अनुपात में लगते हैं। केवल मांस से मनुष्य की भोजन की पूर्ति नहीं हो सकती। अर्थात् मांसाहार करनेवाले भी वनस्पतिजन्य अन्न का सेवन बड़ी मात्रा में करते हैं। मांस के साथ मद्यपान भी किया जाता है, जिससे भोजन की मात्रा अधिक बढ़ जाती है, अतः मांसाहार शाकाहार का पर्याय नहीं हो सकता।

३. मांसाहार के लिए पशुहत्या आवश्यक है, जिससे कृषि में खाद की उपलब्धता कम होने लगती है। दूध भी कम मात्रा में मिलने लगता है। कृषि–कार्य के लिए बैल का मिलना कठिन होता है, अतः कृषि उत्पादन भी कम मात्रा में होता है, अर्थात् अन्न की अनुपलब्धता के कारण समस्या अधिक गहरी हो सकती है। अतः मांसाहार अन्न की अनुपलब्धता का समाधान हो नहीं सकता।

४. इसके विपरीत शाकाहार के कारण पशुओं का उचित संरक्षण होगा। दूध, दही, छाछ, घी आदि पर्याप्त मात्र में उपलब्ध होंगे। गोबर विपुल मात्रा में मिलेगा, जिससे कृषि के लिए खाद बनेगा। कृषि–कार्य में बैल की उपलब्धि से सुविधा होगी, कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। दूध, घी की विपुलता से अन्न की खपत भी उसी अनुपात में कम होगी। बच्चे और युवक दूध तथा घी से पुष्ट होंगे। जिन बच्चों को बचपन में दूध–घी कम मिलता है, उनकी अन्न की आवश्यकता बढ़ी हुई होती है। प्रतिदिन के व्यवहार में भी पाया जाता है कि जिन व्यक्तियों के भोजन में दूध–घी पर्याप्त मात्रा में होता है, उकी अन्न की आवश्यकता कम ही होती है। यह हमने पहले देखा है कि मांसाहार के कारण अन्न की उपज कम होती है। अतः अन्न की कमी का समाधान मांसाहार से नहीं, अपितु शाकाहार से ही होगा। आज संश्लेषित खाद सिन्थेटिक फर्जीलाइजर (Synthetic Fertilizers) का प्रयोग अधिक मात्रा में करने की आवश्यकता क्यों

महसूस हो रही है ? वे कितने महँगे होते हैं ? उनके प्रयोग से भूमि की गुणवत्ता क्यों घटती है ? इनका उत्तर एक ही है—पशु-पक्षीजन्य खाद का अभाव। जिसका कारण पुनः पशु-पक्षी का अभाव और उसका कारण मांसाहार। इस प्रकार का यह दुष्टचक्र है।

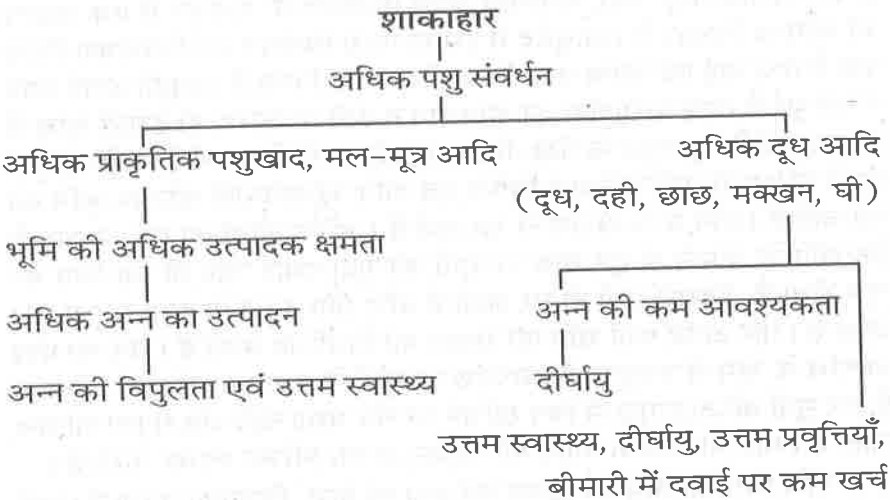

(घ) परिस्थितिवश मांसाहार उचित है ?

यह युक्ति भी निराधार है। कई बार कहा जाता है कि सागर के किनारे का प्रदेश अथवा तत्सम प्रदेशों में अन्न की उपज होती ही नहीं या पर्याप्त मात्रा में नहीं होती। ऐसी दशा में मछली या तत्सम जलचरों का अन्न के रूप में सेवन अनिवार्य हो जाता है। यह युक्ति इसलिए निराधार है कि पहले हम देख चुके हैं कि बिना वनस्पतियों के प्राणी अपना जीवनयापन नहीं कर सकते। समुद्र में वनस्पतियाँ हैं जिन पर निर्भर रह कर जलचर प्राणी अपना जीवनयापन करते हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण यातायात की सुविधाएँ भी बढ़ गई है, अतः जहाँ अन्न की उपज कम है, वहाँ अन्य स्थानों से अनाज सहजता से उपलब्ध हो सकता है। कभी-कभी हम अन्न का आयात भी करते हैं। अतः अन्न का आयात भी समस्या का एक समाधान है।

आश्चर्य तो इस बात का है कि मांसाहार के औचित्य की पुष्टि हेतु कतिपय बहाने ढूँढ़े जाते हैं। ऐसा बहाना ढूँढ़नेवाले वे व्यक्ति भी हैं जिनके घर धनधान्य से समृद्ध हैं। घर में दूध एवं दुग्धजन्य पदार्थ की विपुलता भी है और वे मांसाहारी भी हैं। समुद्र तट से वे मछली, झींगे आदि लाते हैं। यह क्या उनकी मजबूरी है ? परिस्थिति की विवशता है ? ये तो मात्र बहाने हैं।

(ङ) मत्स्य, कुक्कुट, अजा (बकरी), मेष आदि प्राणियों का उपयोग ही क्या ? उनकी संख्या का नियन्त्रण कैसे किया जाए ?

मांसाहारी लोग कई प्रकार की युक्तियाँ देते हैं। उनमें से एक यह युक्ति विज्ञान के नाम पर दी जाती है, जो मात्र अवैज्ञानिक एवं असत्य है। संसार का प्रत्येक सजीव पशु-पक्षी, वनस्पति आदि पर्यावरण के संतुलन में एक महत्त्व की भूमिका निभाता है। आयुर्वेद में इसका गहरा विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है तथा कई प्राणिजन्य पदार्थों का भी उपयोग किया है। प्रकृति अपने आप में परिपूर्ण है। इस परिपूर्णता का आकलन न होने के कारण ही हमारी सोच में गड़बड़ हुई है। कुक्कुट के पंख, विष्ठा भी बड़े उपयोगी पदार्थ हैं। मुर्गे-मुर्गियाँ अपने परिसर में पाये जानेवाले विषैले एवं हानि पहुँचानेवाले कीटक-कृमि को खा जाते हैं। साँप के बच्चे तक वे खा जाते हैं। अनेक लोगों का यह अनुभव है कि साँप के काटने से हुए घाव पर मुर्गी की गुदा दबाई जाए तो वह विष को चूस लेती है, जिससे मुर्गी तो मर जाती है और साँप का डसा हुआ मनुष्य बच जाता है। मोर आदि पक्षी साँप की संख्या को नियन्त्रित करते हैं। मोर का पंख ओषधि के रूप में उपयुक्त है। सर्पदंश पर मुर्गी के स्थान पर मोर भी उपुयक्त है, पर मुर्गी की तरह गुदा से विष खींचने पर मोर मरता नहीं और मनुष्य भी बच जाता है। मोर भी कीटक आदि को खाकर अपना परिसर स्वच्छ करते हैं।

साँप विषाक्त वायु का शोषण कर हवा को शुद्ध, विषमुक्त करता है। चूहों को खाकर उनकी संख्या को नियन्त्रित करता है। अजा (बकरी) का दूध, मूत्र, विष्ठा सभी कुछ अत्यन्त उपयोगी हैं। मछलियाँ, कछुआ आदि जलचर पानी की वनस्पतियाँ आदि खाकर पानी को साफ करते हैं। पानी में अपने प्रश्वास से कार्बनडाइ ऑक्साइड वायु देकर पानी में विद्यमान वनस्पतियों की भी सहायता करते हैं। सभी प्राणियों से कृषि के उपयोगी खाद, मल-मूत्र के रूप में सहज उपलब्ध होते हैं जो रासायनिक खाद की अपेक्षा सस्ते और अच्छे होते हैं।

इन सबकी पारस्परिक संख्या पर नियन्त्रण करने की व्यवस्था ईश्वर ने बना रक्खी है। अतः उनकी संख्या के नियन्त्रण की चिन्ता मनुष्य को करने की आवश्यकता नहीं है।

(च) बूढ़े तथा निरुपयोगी पशुओं को मारने में क्या दोष है ?

मांसाहारी लोग यह भी एक युक्ति देते हैं कि जो पशु-पक्षी जननक्षम नहीं हैं, जो पशु दूध देने में अक्षम है, उन्हें पालना आर्थिक दृष्टि से हितकर नहीं है, अतः उन्हें मारकर खाने में कोई दोष नहीं, अपितु समझदारी है। [क्या अपने परिवार के वृद्ध स्त्री पुरुषों पर मांसाहारी लोग यह तर्क लागू करेंगे ?] उनकी यह युक्ति भी पूरी तरह से निराधार है। केवल अपनी जिह्वा लालसा की पूर्ति हेतु यह युक्ति का दिखावा मात्र है। जो गाय, भैंस, बकरी अदि गर्भिणी होती हैं वे भी दूध नहीं दे सकती तो क्या उन्हें भी मारकर खाया जाये ? कदापि नहीं।

जो पशु बूढ़े हो जाते हैं, वे यदि दूध भी न देते हों, कुछ काम भी न करते हों, तब भी उन्हें मारकर खाना उचित नहीं। उनके आहार की मात्रा भी कम ही होती है। वह भी हल्के स्तर की यथा—घास-फूंस आदि। उनका मलमूत्र तो काम का है, जो कृषि के लिए अत्यन्त उपयुक्त सेन्द्रिय खाद के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। वह रासायनिक खाद की अपेक्षा सस्ता भी होता है और अधिक उपयुक्त भी। अतः ऐसे बूढ़े पशुओं को पालने की व्यवस्था सामाजिक संस्था या राज्य सरकार द्वारा 'वृद्ध पशु संगोपन केन्द्र' के रूप में की जानी चाहिए। उनसे प्राप्त मल-मूत्र से कंपोस्ट खाद बनाया जाए, जिससे प्राप्त पैसा ऐसे पशुओं के पालने की लागत से भी अधिक होता है।

आजकल सरकारी योजनाओं में विवेक का अभाव ही दिखलाई देता है। जनता को गुमराह करने के लिए कहा जाता है कि केवल दूध न दे सकनेवाले या काम न कर सकनेवाले पशु ही मारे जाते हैं। सत्य यह है कि कतिपय पशुहत्या गृह बड़े ही आधुनिक यान्त्रिक रीति से, सरकारी आर्थिक सहायता से तथा ऋषि-मुनियों की पावन भूमि में चलाए जा रहे हैं तथा बड़ी मात्रा में मांस और चमड़ा अन्य देशों को भेजा जा रहा है। इन यान्त्रिक बूचड़खानों को प्रतिदिन लाखों पशु कटाई के लिए लगते हैं। फलस्वरूप अच्छे, दूध दे सकनेवाले, काम कर सकनेवाले पशु भी प्रतिदिन लाखों की संख्या में काटे जा रहे हैं। मनुष्य भी कभी बूढ़ा होता है, कभी वह काम करने के अयोग्य बनता है तब उसे सम्भालना कठिन हो जाता है, ऐसी अवस्था में क्या उसे बूचड़खाने में भेज देंगे ? याद रहे, आत्मा मनुष्य की हो या पशु की, समान ही होती है। यदि आप जानवर की योनि में हों और आपको काटा जाए तो क्या अच्छा लगेगा ? जिन पशुओं ने अपनी आयु मनुष्ययोनि की सेवा में गँवाई, जिन्होंने अपने मनुष्य=स्वामी पर विश्वास कर अपना जीवन न्यौछावर किया, उन पशुओं को बूचड़खाने भेजकर उनसे विश्वासघात करना उचित नहीं है। अतः ये मांसाहार बन्द किया जाए तो पशुहत्या गृह भी स्वयं बन्द हो जाएँगे। यदि मांसाहार हेतु जानवरों का अभाव होगा तो क्या मनुष्य के मांस का सेवन करोगे ? अतः मांसाहार पूर्णरूपेण बन्द किया जाना आवश्यक है।

(छ) अण्डे शाकाहारी हैं।

यह युक्ति दी जाती है कि अण्डों का खाना भी शाकाहार ही है। सन् १९६१ में यूनिसेफ ने 'हैंडबुक ऑफ पोल्ट्री ऑफिसर्स इन इंडिया' नामक पुस्तक प्रकाशित की है। उसमें अण्डों को 'शाकाहार' बताकर उसे शाकाहार का झूठा नाम दिया है। वैज्ञानिकों ने अण्डों पर अनुसन्धान किया जिसमें पाया गया कि अण्डों के छिलकों में सूक्ष्म छिद्र होते हैं, जिनसे अण्डों में भी श्वास-प्रश्वास की क्रिया चलती है। यदि उन्हें ऑक्सीजन न मिले तो श्वास-प्रश्वास की यह क्रिया बन्द पड़ जाती है और अण्डे सड़ जाते हैं। उनसे दुर्गन्ध आने

लगती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अण्डों का स्वरूप शाकाहारी नहीं, अपितु मांसाहारी ही है। उनमें हायड्रोक्लोरिक अम्ल, डी०डी०टी० जैसे विषयुक्त पदार्थ भी पाए जाते हैं। सन् १९७१ में मिशीगन विश्वविद्यालय, अमरीका के वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि अण्डे सजीव ही हैं।

(ज) वनस्पतियाँ जीवधारी ही हैं। यदि उनके खाने से पाप नहीं होता तो मांस खाने से पाप कैसे लगेगा ?

पिछले पन्नों में हमने देखा है कि पाप वह है जिससे धोखा, हानि होती है। प्रत्येक सजीव को जीवनयापन हेतु अन्न की आवश्यकता होती है। प्रकृति में अन्न-चक्र सुचारु रूप से चलता रहता है। प्रत्येक का अन्न सुनियोजित है। उसका सेवन ही उसे आवश्यक होता है। अतः केवल मांसाहारी प्राणियों को ही मांसाहार अनिवार्य है, जो उनके लिए पाप नहीं है। किन्तु शाकाहारी के लिए मांसाहार पाप है। पाप और पुण्य हत्या में नहीं, अपितु उसके उद्देश्य पर निर्भर करता है, अतः केवल मांसाहारियों का मांस भक्षण तथा शाकाहारियों का शाक भक्षण पाप नहीं।

(झ) दूध का सेवन भी तो मांसाहार ही है।

यह तर्क मांसाहारी देते हैं कि दूध का निर्माण भी तो रक्त से ही होता है, अतः दूध का सेवन भी मांसाहार ही है। किन्तु यह तर्क असंगत व अवैज्ञानिक है। दूध का निर्माण अन्न के रस से होता है, इसीलिए चरक-संहिता में कहा गया है कि रसात् स्तन्यो ततो....(चरक संहिता १५.७) निर्माण हुए अन्न के रस का कुछ अंश दूध के निर्माण में जाता है तो कुछ अंश रक्त, मांस, मेद, मज्जा, वीर्य/रज आदि धातु के निर्माण में संलग्न होता है। इससे रक्त बनने में ८-१० दिन लगते हैं, किन्तु दूध का निर्माण प्रतिदिन होता है। दूध देनेवाली गाय को यदि प्याज, लहसुन खिलाया जाए तो उसके दूध में प्यास या लहसुन की गन्ध आती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दूध रक्त से नहीं बनता। दूध देने में पशु को आनन्द ही होता है, दुःख नहीं। दूध बछड़े के पोषण हेतु होता है, किन्तु रक्त स्वयं के पोषण हेतु होता है। अतः दूध और रक्त भिन्न-भिन्न हैं। पशु के मम्मेरी गलैण्ड Mammary Gland में अन्न से दूध का निर्माण होता है, इसलिए दूध निकालना आवश्यक है। और दूध मांसाहार नहीं है।

(ञ) दूध बछड़े के लिए है, मनुष्य के लिए नहीं, अतः दूध का सेवन पाप है।

दूध देनेवाले पालतू पशु का पालन-पोषण उनके लिए अच्छा तथा पर्याप्त मात्रा में अन्न का प्रबन्ध तथा क्रास ब्रीड Cross Breed आदि कारणों से पशु अधिक दूध देते हैं। यदि यह न किया जाए तो दूध का निर्माण घट जाता है, फिर बछड़ों को क्या देंगे ? पशु को नित्य हरी घास उपलब्ध नहीं होती, अतः

विकल्प के रूप में उन्हें भूसा, खली, बिनौला-बीज आदि दिये जाते हैं जिससे दूध का निर्माण अधिक मात्रा में हो सकता है। इसमें ना तो पुण्य है ना ही पाप। अतः यह युक्ति भी आधारहीन ही है। कहा भी है—

'इन्द्रिय दोषात् संस्कार दोषः। संस्कार दोषाच्च अविद्या॥'

सब सत्य विद्याओं की पुस्तक वेद में पशुहत्या का निषेध है—

१. **मांसं नाश्नीयात्** (अथर्ववेद ९.६.९९) अर्थात् मांस का भक्षण न करें।
२. **मा हिंसीः पुरुषं जगत्** (यजुर्वेद) अर्थात् किसी भी प्राणी की हिंसा न करें।
३. **पशून् पाहि** (यजुर्वेद १.१) अर्थात् पशुओं की रक्षा करें।
४. **अजां मा हिंसीः** अर्थात् बकरी को न मारें।
५. **अविं मा हिंसीः** अर्थात् भेड़ को न मारें।
६. **इमं मा हिंसीः द्विपादं पशुम्** अर्थात् दो पैरवाले पशु-पक्षी को न मारें।
७. **मा हिंसी देकशफं पशुम्** अर्थात् घोड़ा, गधा आदि एक खुरवाले पशु को न मारें।
८. **मा हिंस्याः सर्वा भूतानि** अर्थात् सब निर्दोष प्राणियों को न मारें।
९. जो लोग प्राणियों का कच्चा या पका हुआ मांस खाते हैं तथा जो गर्भरूप अण्डों को खाते हैं ऐसे दुर्व्यसनियों का नाश करें। (वेद)
१०. मांस भक्षण करनेवालों को मृत्यु दण्ड दिया जाए। (ऋग्वेद ५.८७.१६)
११. दिव्यत्व प्राप्ति हेतु तृणधान्य अर्थात् वनस्पति का भोजन तथा शुद्ध जलपान अत्यावश्यक है। (ऋग्वेद १.१६४.४०)

प्राचीन ऋषि-मुनियों का (अर्थात् वैज्ञानिकों का) मन्तव्य

१. **आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।**
ध्रुवा स्मृति लभ्ये सर्व ग्रंन्थीनां विप्रमोक्षः॥ (उपनिषद्)
उपनिषदों में आहार शुद्धि पर बल दिया गया है, जिससे मनुष्य की बुद्धि स्थिर होकर मोक्ष की ओर गति शक्ति होती है। साथ ही विवेक की भी प्राप्ति होती है।

२. **जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन॥**
जैसा अन्न होगा वैसा ही मन एवं स्वास्थ्य भी होगा। यदि अन्न शुद्ध और सात्विक होगा तो मन भी सात्विक ही होगा।

३. **अन्नदोषाश्च मृत्युर्विप्रान् जिघांसति।** (मनुस्मृति २.१)
मनु महाराज मांसाहार को निषद्ध मानते हैं। कितना भी पढ़ा लिखा एवं विद्वान् हो, यदि आहार शुद्ध, सात्त्विक न हो तो वह दुःख से बच नहीं सकता।

नाकृत्वा प्राणिनां हिंसा मांसमुत्पद्यते क्वचित्।
न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं विवर्जयेत॥ (मनुस्मृति ४.४८)
प्राणियों की हिंसा किये बिना मांस उपलब्ध नहीं हो सकता। प्राणियों की हत्या, वध सुखदायक नहीं होते, अतः मांसाहार सर्वथा निषिद्ध है।

४. श्रीमद्भगवद्गीता में भी आहार के प्रकार देकर सात्त्विक भोजन को उत्कृष्ट बतलाया गया है—
आयुः सत्त्वबलारोग्यं सुखप्रीति विवर्धनाः।
रसा स्निग्ध स्थिाहृदया आहार सात्त्विक प्रियाः॥ गीता॥
सात्विक भोजन ही आयु, सत्त्व, बल, स्वास्थ्य, सुख और प्रेमवर्धक होता है।

५. आयुर्वेद तथा प्राकृतिक चिकित्सा में भी मांसाहार को संहारक एवं रोगों का उत्पादक माना है, इसलिए मांसाहार का निषेध किया है।

६. महात्मा बसवेश्वर जी ने अभक्ष्य-भक्षक की तथा जीवों की हत्या करनेवालों की कठोर शब्दों में निन्दा की है।

७. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'भक्ष्य एवं अभक्ष्य' का सत्यार्थप्रकाश में विवेचन किया है तथा मांसाहार को 'अभक्ष्य' कहा है। पंजाब में मुलतान नगर में स्वामी दयानन्दजी ने पं० कृष्णनारायण के साथ हुई बातचीत में कहा था कि मांसाहार आत्मिक उन्नति में बाधक है। उन्होंने अपना उदाहरण देते हुए कहा था कि मैं विशुद्ध शाकाहारी हूँ, किन्तु बलवान से बलवान् भी मेरा मुकाबला नहीं कर सकता।

८. ज्ञानेश्वर, तुकाराम, रामदास, शंकराचार्य आदि सन्तों और दार्शनिकों ने मांसाहार अमानवीय और राक्षसी बताया है और निषिद्ध माना है।

९. मुसलमानों में श्रेष्ठ विचारशील, विवेकी, विद्वान् भी स्वास्थ्य के लिए मांसाहार को हानिकारक ही मानते हैं।

१०. मानव-धर्म मांसाहार को निषिद्ध ही मानता है। उसे राक्षसी आहार बतलाता है।

११. **उर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।**
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन्॥ (यजुर्वेद २.३४)
दूध, घी, अन्न, रस, पक्व और गिरे हुए फल और जल इत्यादि बलवर्धक पदार्थों का सेवन कर तृप्त होवें।

१२. मांसभक्षण से श्वेतकुष्ठ जैसे अनेक भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं। शरीर में खतरनाक कीड़े और जन्तु पैदा होते हैं, अतः मांस भक्षण का त्याग करो। (महात्मा बुद्ध)

१३. जो व्यक्ति मांस, मछली और शराब का सेवन करते हैं, उनका धर्म-

कर्म-जप-तप आदि सब कुछ नष्ट हो जाता है। (गुरु ग्रन्थसाहिब)

१४. कपड़ों पर खून (रक्त) लगने से कपड़ा गन्दा हो जाता है। वही घृणित खून जब मनुष्य पीएगा, तब उसकी चित्तवृत्तियाँ अवश्य ही दूषित हो जाएँगी। (गुरु नानकदेव)

१५. तुम मेरे पास एक पवित्र आत्मा वाले होंगे बशर्ते तुम किसी का मांस न खाओ। (बाइबिल)

१६. मांस का प्रचार करनेवाले भी राक्षस के समान हैं। वेदों में मांस खाने का उल्लेख नहीं है। (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

१७. मैं मर जाना पसन्द करूँगा, परन्तु मांस नहीं खाऊँगा। चाहे कुछ भी हो, धर्म हमें अण्डे, मछली, मांस खाने की आज्ञा बिल्कुल नहीं देता। (महात्मा गांधी १३-१८, प्रस्तोता लालमन आर्य, आर्यजगत् विशेषांक, फरवरी १९९१)

१८. मांस के लिए मारा जानेवाला पशु कहता है कि जो मुझे यहाँ मारता है, बाद में (परलोक में या पेट में) मैं उसे मारूँगा। (मनुस्मृति)

१९. वे लोग जो तरह-तरह के अमृत से भरे शाकाहारी उत्तम पदार्थों को छोड़कर मांसादि घृणित पदार्थ खाते हैं, वे सचमुच राक्षस की तरह दिखाई देते हैं। (महाभारत)

२०. दीपक अन्धकार का भक्षण करता है। परिणामस्वरूप काजल को उत्पन्न करता है। उसी प्रकार मनुष्य जैसे अन्न खाता है, वैसी उसकी सन्तानें होती हैं। (चाणक्यनीति)

२१. पशु मनुष्य के छोटे भाई होते हैं। पशु तुम्हारी तरह ही आदमी है। यह सारा ईश्वर का एक परिवार है। अल्लाह के पास इस बलि का खून और मांस नहीं पहुँचता, बल्कि पहुँचता वही है जो उसके पास शुद्ध है, पवित्र है। (मुहम्मद पैगम्बर)

२२. शारीरिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का सम्पूर्ण विकास केवल उसी व्यक्ति का हो सकता है, जो रक्त से निर्मित वस्तु का सेवन न करता हो। (राल्फ वाल्डो ट्राइन)

२३. शाकाहार अधिक सस्ता होता है। दस आदमी के निर्वाह योग्य मांस प्राप्ति के लिए पशुओं को पालने और उन्हें हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए जितनी जमीन लगती है उतनी जमीन में यदि मटर, जौ, बाजरा, अनाज आदि की खेती की जाए तो सौ आदमियों के लिए पर्याप्त मात्रा में भोजन प्राप्त हो सकता है। (हम बोल्ट)

२४. विश्वप्रसिद्ध पहलवान श्री हनुमान गुरुजी जो आधुनिक द्रोणाचार्य के नाम से पहचाने जाते हैं, उन्होंने सर्वत्र शाकाहार का प्रचार किया है। वे

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के साथी तथा क्रान्तिकारी भगतसिंह के आश्रयदाता थे। वे ९८ वर्ष की आयु में भी उतने ही बल से तथा उत्साह से कार्य करते थे। वनस्पति के बीज तथा अन्य भागों से शरीर का नवनिर्माण हो सकता है। इसके विपरीत मांस से ऐसा नहीं हो सकता। बीज को भूमि में डालने से नवांकुर आते हैं। विशेष प्रकार के कुछ पत्ते भूमि में बोने से नवनिर्माण होता है, कुछ कलम से भी वनस्पति का निर्माण हो सकता है, यथा—गन्ना, गुलाब, मोगरा आदि। कई प्रकार की जड़ से भी वनस्पतियाँ उगती हैं। अर्थात् वनस्पति का हर अंग–नवनिर्माण कर सकता है, पर प्राणियों के मांस, हड्डी आदि अंगों से शरीर का निर्माण नहीं हो सकता। अपितु वे अंग सड़–गल जाते हैं, जिससे गन्दगी ही होती है। इससे भी स्पष्ट है कि शाक की अपेक्षा मांस का मूल्य कम ही है। *(१९–२४ संकलनकर्त्ता श्री वैद्यनाथ चौधरी द्वारा प्रकाशित वैवाहिक निमन्त्रण पत्रिका ई०स० १९८० से साभार)*

मित्रो! स्पष्ट है कि मनुष्य स्वभावतः एवं प्राकृतिक दृष्टि से मांसाहारी नहीं है, अपितु शाकाहारी ही है। इसलिए शाकाहार में ही उसे सुख, शान्ति, स्वास्थ्य, आनन्द एवं उत्साह प्राप्त हो सकते हैं। बिना स्वाभाविक आहार के जीव अपना जीवनयापन नहीं कर सकते, अतः वनस्पति तथा वनस्पतिजन्य आहार लेने में न पाप है और न ही हानि। इसके विपरीत स्वाभाविक आहार के स्थान पर अस्वाभाविक आहार के सेवन से स्थूल शरीर तथा सूक्ष्म शरीर आदि पर अनिष्ट परिणाम हो सकते हैं। अतः मांसाहार हानिकारक ही है। भूतदया, परस्पर प्रेम और सद्भावना आदि गुण मनुष्य के जीवन के मूल आधार हैं। उसी में उसके शुद्ध जीवन की सार्थकता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति उसे शुद्ध शाकाहार के बिना नहीं हो सकती। मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी होने से प्रकृति का संरक्षण और सन्तुलन करना उसका दायित्व है। उसी में उसका कल्याण है। प्राकृतिक सन्तुलन उसकी न्यायबुद्धि एवं दया पर निर्भर करता है। तथा 'लिव एण्ड लैट अदर्स लिव' Live and let others live इस उक्ति का अंगीकार उसका कर्त्तव्य बनता है। निर्बल की रक्षा मानवता का धर्म है और मांसाहार के त्याग से ही भूतों की रक्षा सम्भव है। धर्म के नाम पर भी हिंसा तथा मांसाहार में वृद्धि हुई है, क्योंकि तथाकथित धार्मिक ढोंगियों ने धर्म का अनुचित रूप से प्रचार किया तथा हिंसा–अहिंसा, पाप–पुण्य आदि कल्पनाएँ अनुचित ढंग से प्रस्तुत–प्रचलित की हैं। फलस्वरूप धार्मिक लोग भी ढोंग में फँसकर नास्तिक और राक्षस वृत्ति के बन गये। इसी काल में भौतिक विज्ञान का खूब प्रचार–प्रसार हुआ और उसे प्रतिष्ठा भी मिली। उसके संकीर्ण निष्कर्षों के आधार पर मांसाहार, अण्डों का सेवन आदि मनुष्य के लिए उत्तम आहार है ऐसा दुष्प्रचार होता गया जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य पुनः मांसाहार की ओर

आकृष्ट होता गया यद्यपि उन्नत राष्ट्र और वैज्ञानिक युग में उच्च कोटि के विद्वान् लोग ऊँचे स्वर से कह रहे हैं कि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए मांसाहार अनुचित ही है।

भौतिक विज्ञान ने मन, बुद्धि, आत्मा, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि पर तो चिन्तन नहीं किया, किन्तु प्राचीन विद्वान् ऋषि-मुनियों ने मांसाहार को स्थूल शरीर एवं सूक्ष्म शरीर के लिए हानिकारक बतलाया है। मांसाहार से शरीर में रजोगुण तथा तमोगुण की वृद्धि होती है। जिससे मन चंचल बनता है, बुद्धि भ्रष्ट होती है, अविवेक बढ़ता है, ध्यान बुरी बातों की ओर जाता है, जिससे मनुष्य क्रूर, अशान्त, निराश, अविवेक, बेईमान, आलसी, प्रमादी आदि अनेक दुष्प्रवृत्तियों से ग्रस्त होता है। आत्महत्या, चोरी, पागलपन आदि का उद्भव अशुद्धता के कारण अर्थात् मांसाहार से होता है। मांसाहार तो अनुचित है ही, यहाँ तक कि शाकाहार में भी मसाले, नमक, तले हुए पदार्थ, खट्टे, कषाय आदि भी हानिकारक ही होते हैं, अर्थात् भोजन शुद्ध शाकाहारी एवं सात्त्विक ही हो। सात्त्विक भोजन से ही बुद्धि स्थिर एवं विवेकपूर्ण बनती है और मनुष्य मोक्ष प्राप्ति की ओर बढ़ता है जो मनुष्य-जन्म का अन्तिम लक्ष्य है। मांसाहारी एवं अशुद्ध भोजन करनेवाला मनुष्य कभी भी विवेकी, शील, नम्र, दयावान, संयमी और न्यायी नहीं बन सकता और न ही आध्यात्मिक हो सकता है। उसका सामाजिक जीवन भी निकृष्ट ही होता है।

अतः स्थूल, सूक्ष्म, भौतिक, आत्मिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, जड़-चेतन इन सभी आधारों पर मांसाहार हानिकारक ही है। मांसाहारी लोगों द्वारा मांसाहार के पक्ष में दी गई युक्तियाँ, तर्क आदि सब अविवेक तथा छल ही हैं। विज्ञान के नाम पर वे अपने आप को फँसा रहे हैं, धोखा दे रहे हैं। अतः इस समस्या की ओर सतर्क रहते हुए निरपेक्ष बुद्धि से विचार करें। जाति, पन्थ, देश, प्रान्त आदि सबके लिए गलत ढंग से तर्क दिये जाते हैं। हम चिन्तनशील मनुष्य हैं, अतः स्वयं पुरुषार्थ चतुष्टय सुख, शान्ति आदि का लाभ लें। बिना आध्यात्मिक एवं पारमार्थिक पृष्ठभूमि का जीवन व्यर्थ है। यह जानकर जीवन सुखी बनाने के लिए श्रेष्ठ शाकाहार का ही स्वीकार करें।

परिशिष्ट—१

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा संचालित गोरक्षा एवं सर्वविध पशु-प्राणी हत्या विरोधी अहिंसात्मक अभियान

पत्र संख्या—३१७

मन्त्री आर्य्यसमाज दानापुर आनन्दित रहो!

मैं आप परोपकारप्रिय धार्मिक जनों को सब जगत् के उपकारार्थ गाय, बैल और भैंस की हत्या के निवारणार्थ दो पत्र एक तो सही करने का और दूसरा जिस के अनुसार सही करनी है दो पत्र भेजता हूँ। इसको आप प्रीति और उत्साह पूर्वक स्वीकार कीजिये, जिससे आप महाशय लोगों की कीर्त्ति इस संसार में सदा विराजमान रहे। इस काम को सिद्ध करने का विचार इस प्रकार किया गया है कि २००००००० दो करोड़ से अधिक राजे महाराजे और प्रधान आदि महाशय पुरुषों की सही (हस्ताक्षर) कराके आर्य्यावर्त्तीय श्रीमान् गवर्नर जनरल साहेब बहादुर से इस विषय की अर्जी करके उपरी लिखित गाय आदि पशुओं की हत्या को छुड़वा देना। मुझ को दृढ़ निश्चय है कि प्रसन्नता पूर्वक आप लोग इस महोपकार के कार्य्य को शीघ्र करेंगे। अधिक प्रति भेजने का प्रयोजन यह है कि जहाँ-जहाँ उचित समझे वहाँ-वहाँ भेज कर सही करा लीजिये। पुनः नीचे लिखित स्थान में रजिस्ट्री कराके भेज दीजिये। लाला रामशरण रईस मंत्री आर्य्यसमाज मेरठ॥ अलमतिविस्तरेण धर्म्मिवरशिरोमणिषु॥

ताः १२ मार्च सन् १८८२ ई० **(दयानन्द सरस्वती)**

मुम्बई

पत्र संख्या—३२१

सही करने का पत्र

ओ३म्

ऐसा कौन मनुष्य जगत् में है, जो सुख के लाभ होने में प्रसन्न और दुःख की प्राप्ति में अप्रसन्न न होता हो। जैसे दूसरे के लिए अपने उपकार में स्वयं

आनन्दित होता है, वैसे ही परोपकार करने में सुखी अवश्य होना चाहिए। क्या ऐसा कोई भी विद्वान् भूगोल में था, है और होगा, जो परोपकाररूप धर्म और परहानिस्वरूप अधर्म्म के सिवाय धर्म वा अधर्म की सिद्धि कर सके। धन्य वे महाशय जन हैं, जो अपने तन, मन और धन से संसार का अधिक उपकार सिद्ध करते हैं। निन्दनीय मनुष्य वे हैं जो अपनी अज्ञानता से स्वार्थवश होकर अपने तन, मन और धन से जगत् में परहानि करके बड़े लाभ का नाश करते हैं।

सृष्टिक्रम से ठीक-ठीक यही निश्चय होता है कि परमेश्वर ने जो-जो वस्तु बनाया है, वह वह पूर्ण उपकार लेने के लिए हैं। अल्प लाभ से महाहानि करने के अर्थ नहीं। विश्व में दो ही जीवन के मूल है, एक अन्न और दूसरा पान। इसी अभिप्राय से आर्य्यवर शिरोमणि राजे महाराजे और प्रजाजन महोपकारक गाय आदि पशुओं को न आप मारते और न किसी को मारने देते थे। अब भी इन गाय, बैल और भैंस को मारने और मरवाने देना नहीं चाहते हैं। क्योंकि अन्न और पान की बहुताई इन्हीं से होती है। इससे सबका जीवन सुख से हो सकता है।

जितना राजा और प्रजा का बड़ा नुकसान इन के मारने और मरवाने से होता है, उतना अन्य किसी कर्म से नहीं। इस का निर्णय गोकरुणानिधि पुस्तक में अच्छे प्रकार प्रकट कर दिया है अर्थात् एक गाय के मारने और मरवाने से ४,२०,००० चार लाख बीस हज़ार मनुष्यों के सुख की हानि होती है। इसलिए हम सब लोग स्वप्रजा की हितैषिणी श्रीमती राजराजेश्वरी क्विन् विक्टोरिया की न्याय प्रणाली में जो यह अन्याय रूप बड़े-बड़े उपकारक गाय आदि पशुओं की हत्या होती है इस को इन के राज्य में से प्रार्थना से छुड़वा के अति प्रसन्न होना चाहते हैं। यह हम को पूरा निश्चय है कि विद्या, धर्म्म, प्रजाहित-प्रिय श्रीमती राजराजेश्वरी क्विन् महाराणी विक्टोरिया पार्लियामेण्ट सभा और सर्वोपरि प्रधान आर्य्यवर्त्तस्थ श्रीमान् गवर्नर जनरल साहिब बहादुर सम्प्रति इस बड़ी हानिकारक गाय, बैल तथा भैंस की हत्या को उत्साह और प्रसन्नता पूर्वक शीघ्र बन्द करके हम सब को परम आनन्दित करें।

देखिये कि उक्त गाय आदि पशुओं के मारने और मरवाने से दूध घी और किसानों की कितनी हानि होकर राजा और प्रजा की बड़ी हानि हो गई और नित्य प्रति अधिक-अधिक होती जाती है। पक्षपात छोड़ के जो कोई देखता है तो वह परोपकार ही को धर्म्म और परहानि को अधर्म निश्चित जानता है। क्या विद्या का यह फल और सिद्धान्त नहीं है कि जिस-जिस से अधिक उपकार हो उस-उस का पालन, वर्धन करना और नाश कभी न करना। परम दयालु न्यायकारी सर्वान्तर्यामी सर्वशक्तिमान् परमात्मा इस समस्त जगदुपकारक काम करने में ऐकमत्य करे॥

चुन्नीलाल प्रेस (हस्ताक्षर)

पत्र संख्या—३२२

विज्ञापनपत्रमिदम्

सब आर्य पुरुषों को विदित किया जाता है कि जिस पत्र के ऊपर (ओम्) और नीचे (हस्ताक्षर) ऐसा वचन लिखा है, वही सही करने का है उस पर सही इस प्रकार करनी होगी कि जिससे स्वराज्य व देश में ब्राह्मण आदि मनुष्यों की जितनी संख्या हो उतनी संख्या लिख के अर्थात् इतने सौ, हजार लाख व करोड़ मनुष्यों की ओर से मैं अमुक नामा पुरुष सही करता हूँ। इस प्रकार एक श्रीयुत महाशय प्रधान पुरुष की सही में सर्व साधारण आर्य पुरुषों की सही आ जाएगी। परन्तु जितने मनुष्यों की ओर से एक मुख्य पुरुष सही करे वह उन से सही लेके अपने पास अवश्य रक्खे। और जो मुसलमान वा ईसाई लोग इस महोपकारक विषय में दृढ़ता और प्रसन्नता से सही करना चाहें तो कर दें। मुझ को दृढ़ निश्चय है कि आप परम उदार महात्माओं के पुरुषार्थ, उत्साह और प्रीति से यह सर्व उपकारक महापुण्य कीर्तिप्रदायक कार्य यथावत् सिद्ध हो जाएगा।

चैत्र कृष्ण ९ सं० १९३९ तदनुसार १४ मार्च १८८२ मुम्बई

दयानन्द सरस्वती

पत्र संख्या—३३९

ओ३म्

महाशय रूपसिंह जी योग्य इतः ब्रह्मचारी रामानन्द का अनेकविध शुभाशीर्वाद विदित हो। आपका कुशलपत्र आया, समाचार विदित हुए।

आपने जो सत्यार्थप्रकाश संस्कारविधि के विषय में लिखा, परन्तु यहाँ मेरे पास न होने से भेजने में अशक्य हूँ। जो छापेखाने प्रयाग में होतीं तो भी मैनेजर दयाराम को लिखकर भिजवा देता और जो उस पुरुष को अत्यावश्यक हो तो आप मेरठ आर्य्यसमाज प्रधान लाला रामशरणदास जी के पास दाम भेज कर पुस्तक मंगवा लीजिये। अनुमान है कि वहां से पुस्तक आप को अवश्य मिल जाएगी। जो आपने गोरक्षार्थ पत्र के बाबत में लिखा सो हमने जिस समय आपके पास पत्र भेजा था, उसी समय लाहौरादि स्थानों में पत्र भेज दिये थे। ऐसा आर्य्यावर्त्त के भीतर कोई देश बचा हो कि जहां दो चार स्थानों पर पत्र न भेजे हों। और जहां-जहां की यादगारी आती जाती है वहां-वहां अभी भेजते जाते हैं। इसमें कारण यह हुआ कि डाक वालों ने अनर्थ किया है। जैसा इस विषय में आपका पत्र आया ऐसे ही कई एक महाशयों के पत्र आये कि पत्र पहुंचा, परन्तु गोरक्षार्थ का मेमोरियल नहीं मिला। पुनः उन महाशयों के पास भेजना पड़ा। ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करता हूँ कि इस महोपकार कार्य करने में

आपको अत्यन्त सहायता मिले और जो पत्रों की आपको आवश्यकता पड़े तो लिखना, भेज दूँगा। मैं एक बात आपसे कहता हूँ कि जो आप प्रसन्नता से स्वीकार करें तो। क्या जैसे आप पहिले घूमने के वास्ते दो मास की छुट्टी ले कर आये थे ऐसे ही आप पुनः दो एक मास की छुट्टी लेकर पंजाब हाथा, पटियाला और काश्मीर आदि अच्छे–अच्छे राजस्थानों में गोवध के नुकसान व्याख्यान द्वारा विदित कर, बड़े–बड़े प्रधान राजपुरुष महाराजों की सही करावें तो बस आप आर्य्यावर्त्त में सर्वोत्तम प्रतिष्ठा और महापुण्य के भागी होंगे। यह लेख मैंने आपकी योग्यता समझ के लिखा। आशा है कि आप अपनी योग्यता को सफल करेंगे॥ किमधिकलेखेन बुद्धिमद्वर्य्येषु॥ अब १५ वा २० दिन में श्रीयुत स्वामीजी यात्रा करेंगे। विशेष समाचार फिर लिखूँगा॥

आपका अभिवादन परम गुरु स्वामी जी को विदित कर दिया। श्री स्वामी का शुभाशीर्वाद आपको विदित हो॥ भद्रमस्तु॥

ज्येष्ठ वदी ९ शुक्र सम्वत् १९३८॥

ब्रह्मचारी रामानन्द

पत्र संख्या—३६१

ओ३म्

श्री स्वस्ति श्री परोपकारप्रिय सद्गुणविभूषित महाशय बाबू रूपसिंहाभिधेयेषु रामानन्द ब्रह्मचारिणो शतधाऽऽशिषो भूयासुस्तमां, शमिहास्ति तत्र भवदीयं च नित्यमेधमानमाशासे।

महाशय! नमस्ते। आप का शुभ समाचारों से अलंकृत अनुग्रह पत्र (मालवा नवाब का जावरा) में सुशोभित हुआ। अवलोकन कर अतीव हर्षित हुआ। परमात्मा से सर्वदा यही प्रार्थना करता हूँ कि आप महाशय पुरुषों की बुद्धि को परोपकार के करने में निरन्तर नियुक्त किया करे, जिससे पुनः यह आर्य्यावर्त्त देश अपनी पूर्वदशा को सम्प्राप्त होकर अपने मनुष्यरूपी वृक्ष में धर्म अर्थ काम और मोक्ष रूपी चतुष्टय फलों से संयुक्त होकर परमानन्द भोगे। धन्य है आपके पिताजी को जिन महाशय की ऐसी विशाल बुद्धि कि जो इस महोपकारक गोरक्षार्थ विषय को श्रवण कर अति हर्षित हुए और आपको उत्साही किया। परमात्मा करे ऐसे ही पिता सबके होवें। और आप मेरा मान्य पूर्वक आशीर्वाद भी विदित कीजिएगा। मैं नाम से विदित नहीं हूँ, परन्तु उनकी ऐसी योग्यता के जानने से मुझ को अति आनन्द हुआ और ऐसे परोपकार प्रियों के नाम से विदित होने की भी चेष्टा हुई। आशा है कि आप विदित कर देंगे। दूसरा यह हर्ष हुआ कि अब आप का उद्वाह होने वाला है और आपकी योग्यता भी हुई अत्युत्तम है। आप प्रसन्नता के साथ अपना विवाह कीजिये।

आप बहुत सारी बातें जानते भी हैं। तथापि मेरा मन नहीं मानता, इस कारण लिखता हूँ। देखिए मूल कारण आर्य्यावर्त्त के सुधार होने का उचित समय पर विवाह का होना और सत्योपदेश। गृहाश्रम केवल भोग विलास के अर्थ नहीं, किन्तु संसार की उन्नति के अर्थ है। अर्थात् संस्कारविधि के अनुसार विवाहाऽनन्तर उचित समय पर क्रिया करना। इस आश्रम का मुख्य फल यही है कि सुन्दर, धीर, वीर, विद्यादि शुभ गुण युक्त पुत्र रूपी फल की प्राप्ति होना। विना विधि के सांगोपांग कोई भी कार्य्य सिद्ध नहीं होता। इस लिये उचित समय पर जो आप को जिज्ञासा हो पत्र द्वारा विदित करना। मैं (श्रीयुत परम पूज्य गुरु जी) से पूछ कर आप को विदित करूंगा, वैसा ही करना होगा।

आप विवाह किये के पश्चात् इस महोपकारार्थ पंजाब हाथा और कश्मीर आदि राजधानियों में जा गोरक्षा के विषय में (गोकरुणानिधि) के अनुसार व्याख्यान देकर सही करावें तो क्या ही अत्युत्तम बात होवे कि जिसकी उपमा भी मैं देने में असमर्थ हूं। परन्तु इतना तो कह सकता हूं कि थोड़े ही श्रम से महापुण्य का संचय कर अपने मनुष्य जन्म को सफल कर लोगे। जो तुमने सही कराके भेजी थी वह हमारे पास मुम्बई में पहुँची। अब जिन-जिन मनुष्यों की सही कराई जाय, वह प्रायः देवनागरी के अक्षरों में होनी चाहिए। और स्पष्ट अक्षर जिससे स्पष्टता से नाम बंच जावे, परन्तु जो पुरुष अपना नाम किसी विद्या में न लिख सकें उसका नाम सही करानेवाला पुरुष उसकी सम्मति में लिख दे और एक बही के समान पत्रों को बना कर उसमें सब गोरक्षाप्रिय मनुष्यों की सही करानी। पश्चात् उस ग्राम वा नगर में जो माननीय प्रतिष्ठित पुरुष हो उससे हस्ताक्षर गवाही के समान सही कराने के पत्र पर इस प्रकार कराना कि (हमारे यहां इतने मनुष्यों की सही हुई। पश्चात् अपना नाम लिख दे) यह रीति पीछे से श्री स्वामी जी ने प्रकट की है। इस प्रकार के लेख से किन्हीं को राजसम्बन्धी भय न होगा। यह डरपुकनों के लिए है। मुख्य तो विज्ञापनपत्र के मुंबई के लोगों ने भी बहुत सी सही कर ली और बराबर कराते जाते हैं और गुजरात आदि देशों में भी सही होती है। और स्वामी जी के पास मेवाड़ महाराजाधिराज नाहरसिंह जी ने ४०००० इतने हजार मनुष्यों की ओर से सही करके भेज दी है। और मध्य देश में भी बहुत सी सही हो गई। प्रति दिन होती जाती है। इस महोपकारक काम में डाक वालों ने दुष्टता बहुत सी की है। क्योंकि बहुत से स्थानों को पत्र भेजे, परन्तु उनके पत्र आने से यह विदित हुआ कि उनके पास नहीं पहुंचे। देखिए आश्चर्य की बात है [(लाला रामशरणदास मेरठ के पास) ३०० पत्र रजिस्ट्री करा के भेजे थे इतने पर भी उनके पास न पहुंचे, पुनः उनके पास ५० पत्र भेजे हैं। परमात्मा कृपा करे कि ऐसे-ऐसे विघ्नकारी राक्षसों से बचा कर इस महोपकारक कार्य की सिद्धि करने में आर्य भाइयों को सहायता देकर इस कार्य्य की सिद्धि करावे। किमधिकलेखेन परोपकारप्रियेषु। आज वा कल परम गुरु जी

उदयपुर पधारेंगे।

रामानन्द ब्रह्मचारी

ता० २४ जुलाई १८८२ ई०

मालवा जावरा नवाब का

महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य रामानन्द जी

पत्र संख्या—३६४

ओ३म्

लाला कालीचरण रामचरण जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि आज ४ वा ५ दिन व्यतीत हुए हैं, हम उदयपुर में आके नौलखा बाग के महल में ठहरे हैं। यहां सब प्रकार आनन्द मंगल है। बहुत दिन हो गये हैं, अभी तक "आर्य प्रश्नोत्तरी" के उत्तर नहीं छपवाये, क्या कारण है। जो प्रेस एक्ट की शंका हो तो देखे गये पत्रक पण्डित मुन्नालाल मन्त्री आर्यसमाज अजमेर के पास भेज दीजिये। वे छाप देंगे। इस विषय में पत्र भी आज उनके पास भेज दिया है। जो छप चुकी हो तो शीघ्र विदित करो।

और गोरक्षार्थ कितनी सही हो चुकी। इसका भी उत्तर लिखना। इस समय (आर्यभाषा के) राजकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ जो मेमोरियल छपे हैं सो शीघ्र भेजना। और आप लोग भी जहाँ तक हो सके गोरक्षार्थ सही और आर्यभाषा के

राजकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ शीघ्र प्रयत्न कीजिये। और फर्रुखाबाद के आर्यसमाज तथा पाठशाला का जैसा वर्तमान हो लिखना। और हम भी जो कुछ विशेष यहां का समाचार लिखने योग्य होगा लिखेंगे।

१४ अगस्त सन् १८८२ ई० **[दयानन्द सरस्वती]** (उदयपुर)

पत्र संख्या—३६८

ओ३म्

श्रीयुत पण्डित गोपालराव जी आनन्दित रहो।

विदित हो कि गोरक्षार्थ हस्ताक्षर पत्र के सहित आप का कुशल पत्र पहुँचा। पत्रस्थ समाचार के अवलोकन करने से अत्यन्त हर्ष हुआ। यह आप ने सर्वोपकारक धन्यवादार्ह पुरुषार्थ किया। परमात्मा दिंन प्रति ऐसे ही कर्मों के सिद्ध करने में उत्साही करे। आशा है कि आर्यभाषा के प्रचारार्थ भी आप स्वपुरुषार्थ की प्रकटता करेंगे। हम उदयपुर पहुंच कर नौलखा बाग के राज महलों में ठहरे हैं। एक बारे श्रीयुत आर्यकुल दिवाकर श्री महाराणा साहब पधारे। परस्पर प्रेम प्रीति के साथ समागम हुआ। जैसा उन का नाम है वैसे ही गुण भी देखे। इत्यादि।

द्वितीय श्रावण [शुदी] १२ शनि सम्वत् १९३९।

(दयानन्द सरस्वती)

परिशिष्ट—२

राजस्थान के पोलिटिक एजेण्ट कर्नल ब्रुक्स से महर्षि दयानन्द का गोरक्षा पर वार्त्तालाप

जून १८६६ की घटना है। एक दिन स्वामीजी अजमेर में वंशीला के बाग में कुर्सी पर बैठे हुए थे। सामने होकर कर्नल ब्रुक, एजेण्ट गवर्नर जनरल निकले। वह गेरुआ वस्त्र वालों से बहुत चिढ़ते थे। पं० वृद्धिचन्द्र जो स्वामीजी से अष्टाध्यायी महाभाष्य पढ़ते थें स्वामीजी से बोले कि महाराज आप कुर्सी दूसरी ओर करलें यह साहब लोग संन्यासियों से बहुत जलते हैं। स्वामीजी ने कहा हम तो यही चाहते हैं और कुर्सी को और आगे को करके बैठ गये। ब्रुक साहब बाग के भीतर चले आये। स्वामीजी उन्हें बाग में प्रवेश करता देख इस विचार से कि यदि कुर्सी पर बैठे रहेंगे तो उनके सम्मान के लिए उठना पड़ेगा, पहले से ही कुर्सी से उठकर टहलने लगे। वृद्धिचन्द्र ने कहा कि मैं आपसे

पहिले ही कहता था आपने न माना। स्वामीजी ने कहा कुछ परवाह नहीं। ब्रुक साहब ने आकर अपनी टोपी उतारी और स्वामीजी से हाथ मिलाकर स्वामीजी के सामने की कुर्सी पर बैठ गये और बातें करते रहे जो इस प्रकार थीं।

स्वामीजी—आप धर्म्म का स्थापन करते हैं वा खण्डन ?

ब्रुक—धर्म्म-स्थापन करना तो हमारे यहाँ भी अच्छा है, परन्तु जिसमें लाभ हो वह करते हैं।

स्वामीजी—आप लाभ की नहीं प्रत्युत हानि की बात करते हैं।

ब्रुक—कैसे ?

स्वामीजी—देखिए एक गौ से कितना लाभ होता है और उससे कितने मनुष्यों का पालन होता है। फिर आप बतलाइये गौ-वध में आप को लाभ है या हानि ?

ब्रुक—होती तो हानि है।

स्वामीजी—तो आप गो-वध क्यों करते हैं ?

ब्रुक—यह बात आपकी हमें स्वीकार है। आप हमारे बंगले पर पधारें, हम वहां बातें करेंगे।

यह कहकर ब्रुक साहब चले गये।

दूसरे दिन स्वामीजी को ब्रुक साहब की गाड़ी लेने के वास्ते आई। स्वामी जी जोशी रूपराम को साथ लेकर गये और साहब से पौन घण्टे तक गो-रक्षा विषय पर बातचीत हुई और उन्होंने स्वीकार कर लिया कि गो-वध हानिकारक है, परन्तु उसका बन्द करना मेरे अधिकार में नहीं है, आप लाटसाहब से मिले। ब्रुक साहब ने उन्हें एक चिट्ठी लिख कर दी कि आप यह चिट्ठी लाट साहब को दिखलावें आपसे अवश्य मिलेंगे।

—सन्दर्भ : लेखक श्री बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित, भाग-१, प्रकाशक : आर्य-साहित्य-मण्डल लिमिटेड, अजमेर, प्रथम संस्करण, संवत् १९९० विक्रमी, पृष्ठ ९३।

लेखक-परिचय

डॉ० सुग्रीव काळे

डॉ० सुग्रीव काळे (श्रद्धेय ब्रह्ममुनिजी वानप्रस्थी) विज्ञान, आयुर्वेद, पर्यावरण, प्राकृतिक चिकित्सा एवं वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ हैं। आपका जन्म महाराष्ट्र प्रान्तीय 'धाराशिव' जनपदांतर्गत 'उमरगा' मण्डल के 'औराद' नामक एक छोटे से गाँव में सन् १९३७ में हुआ था। बचपन में ही आप अपने कृषक माता-पिता की छत्र-छाया से वंचित हो गये। अग्रजा संताबाई, पूज्य हरिश्चन्द्र गुरुजी और मुनिवर पं० उत्तममुनिजी वानप्रस्थी ने स्वभावतः इस क्षत्रिय प्रवृत्ति के बालक को सात्विकता, मानवता के साथ-साथ नैतिक, वैदिक संस्कारों से समृद्ध किया।

आपकी विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षा क्रमशः श्रीकृष्ण विद्यालय गुंजोटी और योगेश्वरी महाविद्यालय आंबेजोगाई में सम्पन्न हुई। ये दोनों ही शैक्षिक संस्थान क्रमशः धाराशिव और बीड जनपद में स्थित हैं। सन् १९६५ में सम्पन्न स्नातकोत्तर वनस्पति विज्ञान की वार्षिक परीक्षा में आपको मराठवाड़ा विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम आने का श्रेय प्राप्त है। आपके पचास से अधिक शोध पत्र अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं। मराठवाड़ा अञ्चल में स्थित बीड जनपद के वैद्यनाथ महाविद्यालय में आप वनस्पति शास्त्र विभागाध्यक्ष, प्रपाठक एवं शोध निर्देशक रहे। प्राध्यापकीय जीवन के प्रारम्भिक काल से ही सार्वजनिक कार्यों में अत्यधिक प्रामाणिकता और तल्लीनता के साथ, सतत-अहर्निश तन-मन-धन से सर्वात्मना व्यस्त रहने के बाद भी आपके शोध निर्देशन में छह से अधिक छात्रों ने 'पी-एच०डी०' की उपाधि प्राप्त की है।

आपकी सहधर्मिणी डॉ० विमला काळे भी वनस्पति शास्त्र विषय की ही प्राध्यापिका रहीं। समादरणीय काले दम्पति को अध्यापन के साथ-साथ आदर्श-चरित्र एवं विज्ञाननिष्ठ वैदिक सिद्धान्तों से छात्रों को शिक्षित एवं दीक्षित करने का गौरव प्राप्त है। आप दोनों ने केनिया और इंग्लैण्ड में भी ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ वैदिक सिद्धान्तों का भी प्रचार-प्रसार किया है। जाति निर्मूलन एवं राष्ट्रीयता के उद्देश्य से आपका विवाह अन्तर्जातीय एवं अन्तर्प्रान्तीय हुआ है। अपनी सन्तानों के अतिरिक्त आपके अन्तेवासी ६० से अधिक नवयुवकों ने आपसे प्रेरणा प्राप्त कर अन्तर्जातीय विवाह किये हैं। आपके सुपुत्र चिरंजीव

सर्वश्री डॉ० मधुसूदन, आयुष्मान् विक्रम तथा डॉ० प्रताप क्रमशः यशस्वी अस्थि विशेषज्ञ, उद्योगपति एवं उपजिलाधीश हैं।

डॉ० सुग्रीव काळे सन् १९६९ से आर्यसमाज परली में सक्रिय हैं। सतत छह वर्ष तक सभा मन्त्री रहकर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का गौरव बढ़ानेवाले डॉक्टर महोदय आज भी महाराष्ट्रीय आर्यसमाजों, गुरुकुलों, आर्य पत्रकारिता एवं सर्वविध गतिविधियों के संरक्षक व प्राण बने हुए हैं। आपने अपने सुपुत्रों का व्रत बंध=उपनयन संस्कार महू (मध्यप्रदेश) के पं० राजगुरुजी शास्त्री के पौरोहित्य में सोत्साह, धूमधाम से सम्पन्न कराया था। परन्तु अपनी वानप्रस्थ-दीक्षा के अवसर पर किसी प्रकार का ढोल-ढाल न बजाते हुए, हर प्रकार के सार्वजनिक समारोहों की सम्भावनाओं को नकारते-उपेक्षित करते हुए आप अपनी जन्म-कर्मभूमि से सुदूर चुपचाप उड़ीसा पहुँच गये और गुरुकुल आमसेना के आचार्य, संस्कृत-व्याकरण के विद्वान् स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती से प्राचीन मुनियों की तरह वानप्रस्थाश्रम में दीक्षित होकर डॉ० ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी के नाम से महाराष्ट्र के क्षितिज पर प्रकट हुए।

'येन-केन-प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्' से कोसों दूर रहने की आपकी प्रवृत्ति रही है। 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्' की अपेक्षा 'स्पष्ट-दो टूक-खरी-खरी' बोलने का असाधारण स्वभाव रहा है। आपके कर्मठ, क्रियात्मक, करुणावान्, निःस्पृह, प्रामाणिक, निर्लोभी, मानवतावादी, दानी, उदार व्यक्तित्व ने विश्व में आर्यसमाज, गुरुकुल और महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रतिष्ठा को सुप्रतिष्ठित किया है। आपके व्याख्यान विषयानुरूप, वक्तृत्व कला के उत्कृष्ट एवं आदर्श नमूने सिद्ध हुए हैं।

आपकी लेखन शैली, वैज्ञानिक, तुलनात्मक, तार्किक, संवेदनशील, सर्वहितकारी, उदाहरणों, सिद्धान्त वाक्यों, सन्दर्भ ग्रन्थों और सुभाषितों से विभूषित है। वह सत्य, न्याय और धर्म से सदा समन्वित रही है। आपने वंश परम्परागत वैद्यों का सम्मेलन आयोजित कर इन सबका गवेषणापूर्ण-परिचायक-अपूर्व एवं संग्रहणीय ग्रन्थ भी प्रस्तुत किया है। जो भी आपके सान्निध्य में आता है, वह आपको अहर्निश आर्य संगठन को संगठित और सुदृढ़ करने के लिए विचारों में डूबा हुआ पाता है।

अनुवादक-परिचय

प्राचार्य गोविन्द घनश्याम मैंदरकर

जिनकी सौम्यवाणी और परिष्कृत लिखावट अत्यन्त संतुलित और संयमित है। जो शोर-शराबे और तानाशाही से प्रतीत होनेवाले क्षणों में भी सम्पूर्ण शिष्टाचार का निर्वहन करते हुए अपने कथ्य को कुशलता के साथ सभागृह में प्रस्तुत करने का अद्भुत सामर्थ्य रखते हैं। उर्दू, मराठी, अंग्रेजी भाषा के विशेषज्ञ होने के साथ ही जो राष्ट्रभाषा हिन्दी का भी असाधारण ज्ञान रखते हैं। ऐसे सुशील एवं विनम्र व्यक्तित्त्व के धनी प्राचार्य गोविन्द मैंदरकर जी का जन्म महाराष्ट्रीय मराठवाड़ा अञ्चल के धाराशिव जनपद में १३ अगस्त १९३० को हुआ।

आपके पिताश्री का नाम लिंबाजी और माताजी का नाम लक्ष्मीबाई था। आप महाराष्ट्र सरकार के शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे और ३६ वर्ष की सेवा के पश्चात् अध्यापक महाविद्यालय के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवा निवृत्ति के पश्चात् आपकी आध्यात्मिक वृत्तियों ने आपको स्वाध्याय की ओर आकृष्ट किया। पुनः सृजन के उपकरण अनुवाद के माध्यम से आपने वेद, योग (दर्शन), एकादशोपनिषद्, रामायण, गीता, मनुस्मृति में डुबकियाँ लगाई और अनुभूत स्वानन्द को सरस्वती और लेखनी द्वारा अभिव्यक्त करते रहे। आकाशवाणी धाराशिव पर अनवरत डेढ वर्ष तक आपने प्रवचन दिये। विद्वद्- जगत् में प्रतिष्ठित गवेषणापूर्ण पत्रिका 'वेदवाणी' में निरन्तर तीन वर्षों से प्रतिमास आपके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। 'पंच महाभूत' विषयक शोध निबन्ध परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित विद्वद् गोष्ठी में प्रस्तुत किया गया और उसके वार्षिकांक में प्रकाशित भी हुआ। आर्य लेखक परिषद् द्वारा अयोजित कोटा अधिवेशन में भी आपने 'ज्योतिष विषयक' शोध-निबन्ध प्रस्तुत किया था।

'वेद विषयक' जिन रचनाओं का आपने अनुवाद किया है, उनके नाम हैं—१. वेदों में राष्ट्रभक्ति, २. वैदिक राष्ट्रीय ऋचाएँ, ३. वेद-परिचायिका, ४. वेद ईश्वरीय ज्ञान आदि। योग-दर्शन से सम्बद्ध जिन ग्रन्थों का आपने पुनः सृजन किया उनके नाम हैं—१. योगदर्शन (स्वामी सत्यपति परिव्राजक), २. पातंजल योग-प्रदीप (गीता प्रेस, गोरखपुर), उपनिषद् विषयक जिन ग्रन्थों का आपने रूपान्तर किया उनके नाम हैं—१. एकादशोपनिषद् (सत्यव्रत

सिद्धान्तालंकार), २. बृहदारण्यकोपनिषद्, ३. छान्दोग्योपनिषद् (शांकरभाष्य), रामायण सम्बन्धी आपका अनूदित ग्रन्थ हैं—'रामायण : भ्रान्तियाँ और समाधान' (स्वामी विद्यानन्द सरस्वती), डॉ० सुरेन्दकुमार सम्पादित 'सम्पूर्ण मनुस्मृति भाष्य', 'विशुद्ध मनुस्मृति' तथा 'मनुस्मृति का विरोध क्यों ?' का भी आपने मराठी अनुवाद किया है। इनमें प्रथम 'सम्पूर्ण मनुस्मृति भाष्य' नामक विशाल अनूदित ग्रन्थ अप्रकाशित है।

स्वामी संकल्पानन्दजी की लगभग चालीस लघु पुस्तिकाओं का भी श्री मैंदरकर जी ने मराठी अनुवाद किया है। आपने घुमक्कड़ धर्मी, इतिहास-प्रेमी, ब्र० नन्दकिशोर जी की गौरव ग्रन्थावली का भी भावानुवाद किया है। चर्चित ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं—१. मातृ-गौरव, २. पितृ-गौरव, ३. आचार्य गौरव, ४. अतिथि गौरव, ५. सत्संग-गौरव, ६. कन्या-गौरव, ७. गुरु-गौरव, ८. राष्ट्र-गौरव। इनमें से केवल चार पुस्तिकाओं के ही अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। आर्य लेखक परिषद् के संस्थापक एवं कोषाध्यक्ष डॉ० रामकृष्णजी आर्य (डॉ० वरुणमुनि वानप्रस्थी) व परिषद् मन्त्री डॉ० कुशलदेव शास्त्री के भी पाँच-पाँच शोध निबन्धों का भी आपने मराठी छायानुवाद किया है।

प्राचार्य मैंदरकर जी द्वारा अनूदित अन्य ग्रन्थों के नाम निम्न प्रकार हैं—१. आर्यसमाज के दस नियम (प्राचार्य विजय बिहारी लाल माथुर), २. अद्वैत-मत खण्डन (स्वामी विद्यानन्द सरस्वती), ३. पुरुषार्थी बनो, हिन्दू नाम कसौटी पर (हिन्दू राइटर्स फोरम, दिल्ली)।

आपकी अधिकांश अनूदित रचनाएँ अप्रकाशित हैं। मलयालम, तेलुगू, कन्नड़ की तुलना में मराठी आर्य साहित्य अभी प्रकाशन की दृष्टि से बहुत पीछे है। फिर भी प्राचार्य मैंदरकरजी निराश नहीं हैं। भवभूति की तरह आशावादी स्वर में वे कहते हैं—

उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समान धर्मा।
कालो ह्ययं निरवधिः विपुला च पृथिवी॥

प्राचार्य मैंदरकर ग्यारह वर्षों से आर्यसमाज धाराशिव के प्रधान और महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा परली वैजनाथ की अंतरंग सभा के सक्रिय सभासद हैं। जो उच्चकोटि का हिन्दी साहित्य मराठी में अनुपलब्ध है, उसे अनुवाद द्वारा मराठी पाठकों तक पहुँचाने का आपका प्रयास स्तुत्य है। आप स्वतन्त्रचेता-आर्यसमाजी हैं।

प्रभु आपको दीर्घायु प्रदान करे, जिससे आप इसी प्रकार साहित्य द्वारा समाज, राष्ट्र एवं मानवता की सेवा कर सकें।

सम्पर्क पता— **प्राचार्य गोविन्द मैंदरकर,**
कृतकार्य प्राचार्य, नेहरू चौक, धाराशिव (मराठवाड़ा-महाराष्ट्र)
दूरभाष : ०२४७२-२२४५७१, ०९३७१६-२४२५१